* श्री *

तिथि - पर्व - निर्णय

सम्वत् २०३८ शकाब्द १९०३ सन् १९८१-८२

राजा सूर्य

मंत्री चन्द्र



प्रकाशक-

श्री सारस्वत सभा, काशी

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

तिथि-पर्व-निर्णय

विक्रम संवत् २०३८, श्री शालिवाहन शाके १९०३, ईसवीय सन् १९८१-८२

राजा मंत्री

चंद्र

वत्सर ॥

४०१-१४०२, फसली सन् १३८८-८९ ।

१ को पश्चिम में अस्त होंगे ।

८१ को पूर्व में उदय होंगे ।

को पश्चिम में उदय होंगे ।

को पश्चिम में अस्त होंगे ।

को पूर्व में उदय होंगे ।

ल, आषाढ़ कृष्ण, आषाढ़ शुक्ल, मार्गशीर्ष कृष्ण, मार्गशीर्ष
ल्गुन कृष्ण, फाल्गुन शुक्ल, चैत्र कृष्ण में निर्णित लग्न हैं।

तिथि पर्व निर्णय के प्राप्तकर्त्ता
से निवेदन :—

कृपया, संलग्न कार्ड भरें व
२५ पैसे का टिकट लगाकर
अवश्य भेजें

निवेदक—
प्रधान मन्त्री

एच्० एम्० बी०, बी० बी० एम्०

(पंजीकृत होम्योपैथ)

प्रकाशक—

श्री सारस्वत सभा काशी

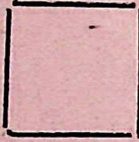
१८६० की २१वीं धारा के अंतर्गत पंजीकृत संख्या २५८/१९४९-५०

कार्यालय—

श्री सारस्वत सभा भवन, सी० के० ९/२, ९/२२ मणिकर्णिका तीर्थ, वाराणसी - २२१००१

बाहर से पत्रिका मँगानेवाले महानुभावों को
५० पैसे का डाक टिकट भेजना आवश्यक है ।

निःशुल्क



प्रधान मन्त्री

श्री सारस्वत सभा काशी

कार्यालय :—श्री सारस्वत सभा भवन,
सी. के. ६/२, ६/२२ मणिकर्णिका तीर्थ
वाराणसी—२२१००१

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

तिथि-पर्व-निर्णय

विक्रम संवत् २०३८, श्री शालिवाहन शाके १९०३, ईसवीय सन् १९८१-८२

राजा — सूर्य मंत्री — चंद्र

॥ भाव नाम संवत्सर ॥

गतकलि ५०८२	बंगला सन् १३८७-८८, हिजरी सन् १४०१-१४०२, फसली सन् १३८८-८९।
गुरु (तारा)	आश्विन शुक्ल १ मंगलवार, २९-९-८१ को पश्चिम में अस्त होंगे। कार्तिक कृष्ण १३ रविवार, २५-१०-८१ को पूर्व में उदय होंगे।
शुक्र (तारा)	वैशाख कृष्ण १२ शुक्रवार, १-५-८१ को पश्चिम में उदय होंगे। माघ कृष्ण १० मंगलवार, १९-१-८२ को पश्चिम में अस्त होंगे। माघ कृष्ण १४ रविवार, २४-१-८२ को पूर्व में उदय होंगे।
शनि	वर्ष भर कन्या राशि पर ही रहेंगे।
विवाह मुहूर्त	वैशाख शुक्ल, ज्येष्ठ कृष्ण, ज्येष्ठ शुक्ल, आषाढ़ कृष्ण, आषाढ़ शुक्ल, मार्गशीर्ष कृष्ण, मार्गशीर्ष शुक्ल, पौष कृष्ण, १ माघ शुक्ल, फाल्गुन कृष्ण, फाल्गुन शुक्ल, चैत्र कृष्ण में निर्णित लग्न हैं।

संपादक—

डा० पं० शिवनारायण भिंगन, एच्० एम्० बी०, बी० बी० एम्०

(पंजीकृत होम्योपैथ)

प्रकाशक—

श्री सारस्वत सभा काशी

१८६० की २१वीं धारा के अंतर्गत पंजीकृत संख्या २५८/१९४९-५०

कार्यालय—

श्री सारस्वत सभा भवन, सी० के० ९/२, ९/२२ मणिकर्णिका तीर्थ, वाराणसी - २२१००१

बाहर से पत्रिका मँगानेवाले महानुभावों को ५० पैसे का डाक टिकट भेजना आवश्यक है।

निःशुल्क



RAJ BHAVAN
LUCKNOW
फरवरी , 1981

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि ''श्री सारस्वत सभा',' काशी द्वारा पिछले 26 वर्षों से वार्षिक पत्रिका ''तिथि-पर्व निर्णय'' का प्रकाशन किया जा रहा है और इसका 27वाँ अंक मार्च, 1981 में प्रकाशित हो रहा है।

यह हर्ष और सन्तोष की बात है कि तिथि एवं पर्वों के बारे में जन-साधारण को सही जानकारी देने और इस सम्बन्ध में उनका उचित मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से प्रकाशित इस पत्रिका का निःशुल्क वितरण किया जाता है और देश तथा विदेशों में इसकी बड़ी माँग है।

इस पत्रिका का प्रकाशन एक अच्छे उद्देश्य से किया जा रहा है और मैं इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

(च० प्र० ना० सिंह)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्राक्कथन

बालार्क मण्डलाभासां शीतांशुकिरणोज्ज्वलाम् ।
श्वेत हंस समासीनां वन्दे नील सरस्वतीम् ॥

अहर्निश दिग्दिगंत में वेदमयी की पावन झंकार जिसकी वीणा से झंकृत हो; सृष्टि, स्थिति, लय के त्रितालों से महाकाल को सतत् नृत्य करा रही है, उसी परा-पराणां परमा परमेश्वरी विद्याराज्ञी नील सरस्वती के अमृतमय कृपा-कटाक्षाप्लावित वरदा के वरद-पुत्र हम सारस्वत "तिथि - पर्व - निर्णय" का यह सत्ताईसवां पुष्प उस ममतामयी माँ के श्रीचरणों में समर्पित करने में सक्षम हुए हैं। हम अपने प्रिय पाठकों के करकमलों में वही प्रसाद समर्पित कर माँ से प्रार्थना करते हैं कि नूतन वर्ष सभी को सद्बुद्धि एवं विपुल ऐश्वर्य देनेवाला हो।

श्रद्धांजलि :—

महाकाल के कृपाशील हाथों ने विगत वर्ष में सारस्वत समाज के प्रतिष्ठित वयोवृद्ध पं० जोगेन्द्रनाथ शर्मा कुमंडिये "मधुप", पं० जगत नारायण झिंगन, युवक अनन्तराम पाठक प्रभृति को हमसे अलग कर दिया। हम बावा विश्वनाथ से इन दिवंगतों की आत्मा के लिए सायुज्य की कामना करते हैं तथा अपनी श्रद्धा के सुमन उन्हें समर्पित करते हैं।

पत्रिका प्रकाशन :—

आज हम यह सत्ताईसवां अंक आपके कर-कमलों में समर्पित कर गौरव का अनुभव कर रहे हैं। हमारा यह प्रयास कितना संघर्षमय है और महर्घता के इस युग में हमें कैसी आर्थिक कठिनाई का सामना कर इस लोकप्रिय पत्रिका को अपनी साज-सज्जा के साथ आप तक पहुँचाना पड़ता है, इसका आप पूर्ण अनुभव कर सकते हैं। हमने अनेक बार एतदर्थ देश के उदार दाताओं से इस संदर्भ में इन्हीं कालमों में अपील की कि वे इस धर्मार्थ कार्य में हमें सहयोग देकर इस पुण्य कार्य में सहायक हों। हम अपने प्रिय पाठकों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे इस दिशा में हमें सहयोग दें। हम आपसे यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम अपनी संस्था के पूर्व सत्संकल्प के अनुसार इसका निःशुल्क वितरण करते रहने में सर्वथा संघर्षशील रहेंगे। इसमें भी यदि आपका हमें सहयोग प्राप्त होता रहा तो हम उत्तरोत्तर आपकी सेवा करने में अपने को सक्षम पावेंगे और आप अवश्यमेव इस महत् पुण्य के भागी होंगे। हमारे प्रिय पाठक इसके स्वयं आजीवन सदस्य बनकर एवं औरों को बनाकर तथा उदार दाताओं द्वारा विज्ञापन एवं विशेष सहायता दिलाकर हमारी आर्थिक कठिनाइयों को हल कर सकते हैं। आजीवन सदस्यता शुल्क पचीस रुपया मात्र है। अतः हमारी उनसे अपील है कि वे इस धर्मार्थ कृत्य में अवश्य सहयोग देकर अक्षय पुण्य के भागी बनें।

धन्यवाद प्रकाशन :—

पत्रिका के प्रकाशन में हम पं० बालकृष्ण कपूरिया, अध्यक्ष, श्री सारस्वत सभा काशी को जो अपने जीवन में अत्यंत व्यस्त रहते हुए सभा की निरंतर सेवा में रत रहते सभा को हार्दिक स्नेह से सिंचित करते रहते हैं। उनके

लिए धन्यवाद शब्द तो बहुत छोटा है; उन्हें हम सभा की ओर से विशेष धन्यवाद देते हैं। पत्रिका के सम्पादक मण्डल के संयोजक श्री रामरंगा शर्मा, एम० ए०; पं० अमरनाथ जी जेतली, याज्ञिक; पं० प्रेमनाथ डोगरा, बी० ए०; पं० रेशमलाल झिंगन के सहयोग के हम आभारी हैं। हम अपने आजीवन सदस्यों एवं इस पत्रिका के विज्ञापनदाताओं के भी आभारी हैं और हम सभा की ओर से इन्हें धन्यवाद देते हैं। हमारी परमपिता से प्रार्थना है कि नवीन वर्ष हम सभी के लिए मंगलमय हो। पत्रिका के संपादनार्थ हमने जिन आर्षग्रन्थों एवं पंचाङ्गों से यत्किंचित् सहायता ली है, हम उनके सधन्यवाद आभारी हैं।

शुभम् भूयात्

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुखभाग् भवेत्॥

भवदीय—
शिव नारायण झिंगन
प्रधान मंत्री—
श्री सारस्वत सभा काशी

★

श्री सारस्वत सभा, काशी

का

संरक्षक - मंडल

माननीय पण्डित सन्त छोटे जी महाराज "मानस राजहंस"

" " विश्वनाथ प्रसाद जी तिक्खे, एम० ए०

" " मदन लाल जी मिश्र कालिया—राष्ट्रकर्मी

" " राम मोहन जी शास्त्री, बी० ए०, प्रधानाचार्य, मारवाड़ी संस्कृत कालेज, वाराणसी

" " राम लाल जी शास्त्री, साहित्य शिरोमणि

" " राधेकृष्ण जी मिश्र वग्गे

" " शिवनाथ जी मोहले वैद्य, आयुर्वेदाचार्य

" " डा० अमरनाथ जी शर्मा (नेत्र रोग विशेषज्ञ)

सन् ८०-८१ को कार्यकारिणी समिति एवं उप-समितियों के पदाधिकारियों को सूची

पण्डित श्री वालकृष्ण कपूरिया, कर्मकाण्डी राज पुरोहित (सभापति)

" " पूरनचन्द्र पाठक, भूतपूर्व नगर-प्रमुख, वाराणसी (उपसभापति)

" " डा० रजनी कान्त दत्ता, एम० बी० बी० एस० (उपसभापति)

" " डा० शिवनारायण झिंगन, एच एम०, बी० बी० बी० एम० (पंजीकृत होमियोपैथ) (प्रधान मन्त्री)

" " लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, एडवोकेट (मन्त्री)

" " किरन शर्मा, एडवोकेट (मन्त्री)

" " केदारनाथ मोहले (कोषाध्यक्ष)

" " प्रेमनाथ डोगरा, बी० ए० (मन्त्री, पुस्तकालय वाचनालय समिति)

" " डा० रामरंग शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० डिग्री कालेज, वाराणसी (संयोजक–तिथि-पर्व-निर्णय समिति)

" " रमेश चन्द्र कपूरिया (संयोजक—अर्थ समिति)

" " अमरनाथ जैतली याज्ञिक कुण्ड मण्डप केसरी (संयोजक—शिक्षा समिति)

" " रेशम लाल झिंगन पुरोहित (संयोजक—वस्तु भण्डार समिति)

" " राम किशोर मिश्र बग्गे, एम० ए० (संयोजक—व्यायाम समिति)

" " राम किशोर जैतली (संयोजक—जातीय विवरण पुस्तिका समिति)

" " ओम् प्रकाश कुमड़िये (संयोजक—सेवा समिति)

सदस्यगण

पण्डित श्री काशीनाथ झिंगरन, बी० काम०

" " गणेशनाथ मोहले

" " मोतीचन्द शर्मा, एम० ए०, बी० टी०, भूतपूर्व शिक्षाध्यक्ष, नगर महापालिका, वाराणसी

" " बद्रीनाथ पाठक

" " चन्द्र कुमार तिक्खे

" " विश्वनाथ वशिष्ठ

पण्डित श्री कैलाशनाथ जैतली, आयुर्वेदाचार्य, बी० आई० एम० एस०, दूतनाड़ी विशेषज्ञ

" " ओम प्रकाश शर्मा भटूरिये

" " लक्ष्मीनाथ सण्ड, बी० ए०

" " प्रेम शंकर मिश्र

" " कृष्ण चन्द्र शर्मा राजमैते

" " श्री कृष्ण मिश्र कालिया

बिना मूल्य की

'तिथि-पर्व-निर्णय' पत्रिका, काशी के अतिरिक्त निम्नलिखित नगरों में भी प्राप्त की जा सकती है।

लिखित स्थानों में किसी प्रकार का व्यय नहीं लगता है। काशी से मँगानेवाले सज्जनों को ५० पैसे डाक व्यय भेजना आवश्यक है।

(वितरक बन्धुओं से निवेदन)

कृपया पत्रिका की प्राप्ति स्वीकार एवं संलग्न कार्ड अवश्य भेजें, अन्यथा सभा के निर्णयानुसार अगले वर्ष से नाम पृथक कर दिया जायेगा एवं पत्रिका भेजने में सभा असमर्थ होगी।

अमृतसर—	पं० श्री शम्भूनाथ जैतली काशीवाले, कटरा दुलों, गली वावेयाँ।
अमृतसर—	,, ,, बृजमोहन शर्मा, कूँचा भाई सन्तसिंह।
दिल्ली—	,, ,, मुन्नू लाल मिश्र, बड़ा मन्दिर, कटरा नील।
दिल्ली—	,, ,, किशन चंद जेतली, ५६६ कटरा नील
दिल्ली—	,, ,, डा० किशन नारायण मोहले, बड़ा छीपीवाड़ा।
आगरा—	,, ,, बृजनाथ जैतली, माईथान।
आगरा—	,, ,, बदरी प्रसाद मोहले, (पांडेजी), शीतला गली।
आगरा—	,, ,, उदयशंकर जी कुमड़िया, १८/१११ माईथान।
शाहजहाँपुर—	,, ,, विश्वनाथ कपूरिया, भीतरी गली, मोती चौक।
कानपुर—	,, ,, रतन चन्द कालिया, १६ मुन्नालाल स्ट्रीट, परेड।
कानपुर—	,, ,, इन्द्रनारायन झिंगन, ३१/७७, वेल्दारी मुहाल।
लखनऊ—	,, ,, पण्डित श्री प्रेमनारायण मोहले, देहली क्लाथ मिल्स स्टोर्स, हजरतगंज।
लखनऊ—	,, ,, प्रमोद कालिया, जी-१/३ पेपर मिल कालोनी।
लखनऊ—	,, ,, पंडित हरिहर नाथ शर्मा, बड़ी कालीजी के सामने, चौक।
फैजाबाद—	,, ,, अभयचंद कालिया, रेलवे सिटी बुकिंग एजेन्सी, रकाबगंज।
फैजाबाद—	,, ,, देवी नारायण शर्मा इलाहाबाद बैंक।
इलाहाबाद—	,, ,, महावीर प्रसाद सारस्वत, ६५, भारती भवन।
इलाहाबाद—	,, ,, रामगोपाल संड, एम० ए०, एम० एड०, कल्यानी देवी।
मुरादाबाद—	,, ,, श्री पन्नालाल पाठक, लोहागढ़।
मेरठ—	,, ,, मनोज जोशी, ३५ ए, न्यू मार्केट, बेगमपुल।
करनाल—	,, ,, हंस राजतिक्खा, डी ३२ माडल टाऊन।

विन्ध्याचल— पण्डित श्री कन्हैयालाल झिंगन, व्यवस्थापक, श्री सारस्वत खत्री धर्मशाला।

मिर्जापुर— पण्डित श्री हरनाथ मोहले, वैद्य, बुन्देलखण्डी मोहाल।

गोरखपुर— श्री राजेन्द्र प्रसाद भल्ला, भल्ला डीजल्स, सिनेमा रोड।

पटना सिटी— पण्डित श्री गोवर्द्धन नाथ, कचौड़ी गली।

" पण्डित श्री चुन्नीलाल जी एडवोकेट, कचौड़ी गली।

दरभंगा— पण्डित श्री भोलानाथ जेतली, जेतली स्वीट्स एण्ड सोप इन्डस्ट्रीज, काली स्थान।

वर्दवान— पण्डित श्री रामाशंकर मिश्र, चावल पट्टी, नोतुनगंज।

कलकत्ता— श्री लक्ष्मीनारायण झिंगन, हनुमान मन्दिर, महात्मा गांधी रोड।

" श्री वैजनाथ मेहरोत्रा, १७८, महात्मा गांधी रोड।

कलकत्ता-७— श्री कार्तिक प्रसाद खन्ना, ५१, वाराणसी घोष स्ट्रीट।

मालीगाँव [आसाम]—डाक्टर श्री प्रेमनाथ झिंगरन, क्वार्टर नं० १५६, गौशाला रोड, माली गाँव, गौहाटी ७८१०११, असम।

गाडरवाड़ा [मध्य प्रदेश] डाक्टर भास्करदत्त जैतली काशी वाले, सारस्वत सदन।

पिनांग [मलाया]— पण्डित आर. के. शर्मा, बार-एट-लॉ, ५ नार्गन रोड।

रायपुर— पण्डित फूलचन्द्र मिश्रा, अलका भवन, नं० ६२ विवेकानन्द कालोनी।

बम्बई— पण्डित इन्द्रदत्त शर्मा, एडवोकेट, ६२ आनन्दनगर, ६ जुहूतारा।

" पण्डित त्रिलोकी नाथ जैतली, ४६ निवाना, पाली हिल, बान्द्रा, बम्बई-५४।

" श्रीमान् लक्ष्मनदास कपूर, एच. नारायनदास एण्ड कम्पनी, ४१/४३ चम्पागली, बम्बई ४००००२

England Mr. B. D. Mehra, 76 Trinity Road, South Hall, Middlessex.

U. S. A. Mr. K. L. Kool, Road No. 288, Bidwill, Ohio.

तिथि-पर्व-निर्णय का वाराणसी में प्राप्तिस्थान—

१—आचार्य श्री पण्डित रामलाल जी शास्त्री—साहित्य-शिरोमणि, डी० ३/६२ लाहोरी टोला।

२—पण्डित राधेकृष्ण जी मिश्र, निष्काम औषधालय, सरस्वती फाटक।

३—पण्डित बालकृष्ण जी कपूरिया कर्मकाण्डी, राज पुरोहित, ७/७० सिद्धेश्वरी।

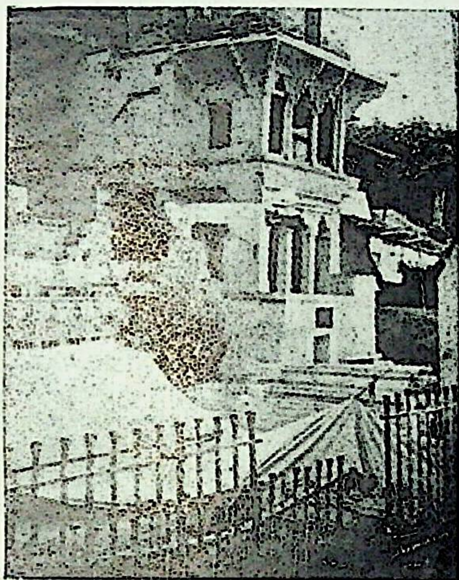
४—डा० पण्डित शिवनारायण जी झिंगन, एच. एम. बी., बी. बी. एम्., आनन्द होमियो सदन, सिद्धेश्वरी।

५—पण्डित अमरनाथ जी जैतली याज्ञिक, कुण्डमण्डप केसरी, अमर भवन, २३/७६, मंगलागौरी।

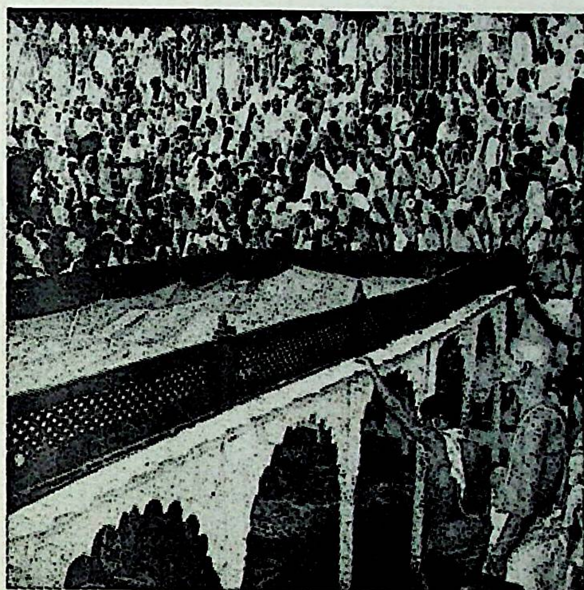
६—पण्डित शिवनाथजी वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, जतनबर।

७—डा० रामजी जेतली, एम. ए. एस., २/२७, राम भवन, कामेश्वर महादेव (गायघाट)।

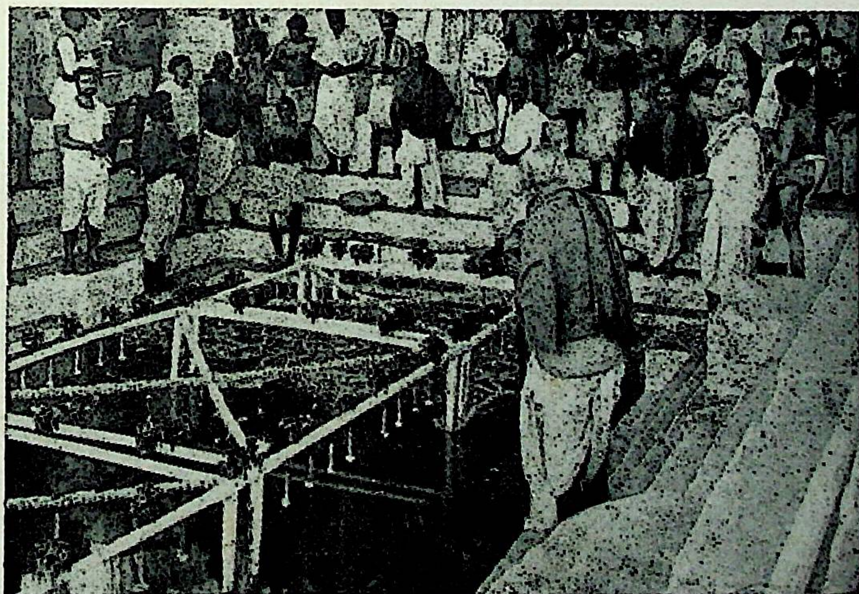
७—श्री लक्ष्मीनारायणजी भारद्वाज, एडवोकेट (गायघाट)।



मणिकर्णिका कुण्ड



मणिकर्णिका तीर्थं में स्नान



मणिकर्णिका तीर्थं का पूजन

श्री पं० बैकुण्ठ नाथ उपाध्याय द्वारा प्रकाशित "श्री काशी दर्शन" पत्रिका से साभार एवं सस्नेह उद्धृत ।

चैत्र शुक्ल पक्ष (५ अप्रैल से १९ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
५	र.	१	२३	२६	रे.	१६	१६	ऐं.	७	५५	कि.	१३	८	व.	०	१	मे.	१६	१६	५/४७	६/१४
६	सो.	२	२१	४	अ.	१४	३८	वि.	१	४८	वा.	१०	४६	कौ.	२१	३८				५/४६	६/१५
७	मं.	३	१८	३८	भ.	१२	१७	प्री.	२२	३७	तै.	८	२४	ग.	१९	११	वृ.	१८	३३	५/४५	६/१५
८	बु.	४	१६	१२	कृ.	११	१८	आ.	१९	३८	व.	५	५९	वि.	१६	४७				५/४४	६/१६
९	गु.	५	१४	०	रो.	९	४७	सौ.	१६	३८	वा.	१४	३०	कौ.	१	२७	मि.	२१	८	५/४३	६/१६
१०	शु.	६	११	५८	मृ.	८	२८	शो.	१३	५३	तै.	१२	२३	ग.	२३	३५				५/४२	६/१६
११	श.	७	१०	१४	आ.	७	२४	गं.	११	२३	व.	१०	४७	वि.	२२	५	क.	०	५३	५/४१	६/१७
१२	र.	८	८	१२	पु.	६	४१	सु.	९	९	व.	९	२२	वा.	२०	५२				५/४०	६/१७
१३	सो.	९	७	१२	पु.	६	२३	धृ.	७	१९	कौ.	८	२१	तै.	२०	४				५/३९	६/१८
१४	मं.	१०	७	२५	श्ले.	६	३२	शू.	५	४६	ग.	७	४६	व.	१९	४५	सि.	६	३३	५/३८	६/१८
१५	बु.	११	७	२१	म.	७	१२	वृ.	४	२	वि.	७	४२	व.	१९	५६				५/३७	६/१९
१६	गु.	१२	७	५२	पू.	८	२१	ध्रु.	३	४४	वा.	८	९	कौ.	२०	३७	क.	१४	४५	५/३७	६/१९
१७	शु.	१३	८	५१	उ.	९	५८	व्या.	३	४६	तै.	९	५	ग.	२१	४६				५/३६	६/१९
१८	श.	१४	१०	१९	ह.	१२	२	ह.	४	७	व.	१०	२८	वि.	२३	२१	तु.	१	१३	५/३४	६/२०
१९	र.	१५	१२	७	चि.	१४	२४	व.	४	२८	व.	१२	१३	वा.	१	१३				५/३३	६/२०

वैशाख कृष्ण पक्ष (२० अप्रैल से ४ मई तक)

अं. ता.	वा.	ति	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२०	सो.	१	१४	८	स्वा.	१७	०	सि.	५	१७	कौ.	१४	१२	तै.	३	१६				५/३२	६/२१
२१	मं.	२	१६	१३	वि.	१९	३७	व्य.	सम्पूर्ण		ग.	१६	१६	व.	५	१६	वृ.	१२	५७	५/३१	६/२१
२२	बु.	३	१८	०	अनु.	२२	५	व्यं.	५	५१	वि.	१८	१८	भ.	सम्पूर्ण					५/३१	६/२२
२३	गु.	४	१९	५१	ज्ये.	०	१७	व.	६	१७	भ.	७	९	बा.	२०	१	ध.	०	१७	५/३०	६/२२
२४	शु.	५	२१	८	मू.	२	५	प.	६	२७	कौ.	८	४१	तै.	२१	२२				५/२९	६/२३
२५	श.	६	२१	५९	पू.	३	२७	शि.	६	१७	गं.	९	४७	व.	२२	१४				५/२८	६/२३
२६	र.	७	२२	१८	उ.	४	१७	सि.	५	६/२	वि.	१०	२५	व.	२२	३७	म.	९	३९	५/२७	६/२४
२७	सो.	८	२२	९	श्र.	४	३७	शु	३	३२	वा.	१०	३३	कौ.	२२	२९				५/२६	६/२४
२८	मं.	९	२१	२४	ध.	४	३०	शु.	१	४९	तै.	१०	११	ग.	२१	५२	कुं.	१६	३४	५/२६	६/२५
२९	बु.	१०	२०	१४	श.	३	५५	ब्रं.	२३	४९	व.	९	२०	वि.	२०	४८				५/२५	६/२५
३०	गु.	११	१८	४०	पू.	३	२	ऐं.	२१	२३	व.	८	३	बा.	१९	१९	मी.	२१	१५	५/२४	६/२६
१	शु.	१२	१६	४७	उ.	१	४७	वै.	१८	४५	कौ.	६	२५	तै.	१७/४	३१/२८				५/२४	६/२६
२	श.	१३	१४	४०	रे.	०	२१	वि.	१५	५५	व.	१५	२४	वि.	२	१६	मे.	०	२१	५/२३	६/२७
३	र.	१४	१२	१९	अ.	२२	४४	प्री.	१२	४४	श.	१३	७	च.	२३	५३				५/२२	६/२७
४	सो.	३०	९	५३	भ.	२१	३	आ.	९	५१	ना.	१०	३९	कि.	२१	२६	वृ.	२	३९	५/२१	६/२८

वैशाख शुक्ल पक्ष (५ मई से १८ तक)

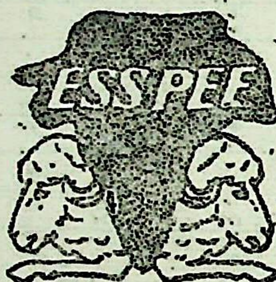
अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	॰	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
५	मं.	१	७/५	२६/२	कृ.	१६	२४	सौ.	६/६	४५/३६	व.	८	१२	वा.	१६	०				५/२०	६/२८
६	बु.	३	२	४६	रो.	१७	५२	ऽगं.	०	४७	कौ.	५	४८	तै.	१६/१	४०/२	मि.	५	१०	५/२०	६/२९
७	गु.	४	०	४२	मृ.	१६	२९	सु.	२२	०	व.	१४	२९	वि.	१	२६				५/१९	६/२९
८	शु.	५	२२	५६	आ.	१५	२१	धृ.	१६	२७	व.	१२	३१	वा.	२३	३७				५/१८	६/३०
९	श.	६	२१	३०	पु.	१४	३५	शू.	१७	१२	कौ.	१०	५२	तै.	२२	७	क.	८	४६	५/१७	६/३१
१०	र.	७	२०	३०	पु.	१४	११	गं.	१५	१८	ग.	९	३५	व.	२१	२				५/१७	६/३२
११	सो.	८	१९	५८	श्ले.	१४	१३	वृ.	१३	४४	वि.	८	४४	व.	२०	२६	सिं.	१४	१३	५/१६	६/३२
१२	मं.	९	१९	५६	म.	१४	४६	ध्रु.	१२	३५	वा.	८	२२	कौ.	२०	१८				५/१६	६/३३
१३	बु.	१०	२०	२५	पू.	१५	४९	व्या.	११	४९	तै.	८	३०	ग.	२०	४२	कं.	२२	१३	५/१५	६/३३
१४	.	११	२१	२३	उ.	१७	२२	ह.	११	२९	व.	९	९	वि.	२१	३६				५/१५	६/३४
१५	शु.	१२	२२	४८	ह.	१९	२०	व.	११	२९	व.	१०	१७	वा.	२२	५८				५/१४	६/३४
१६	श.	१३	०	३४	चि.	२१	४०	सि.	११	४८	कौ.	११	४९	तै.	०	४१	तु.	८	३०	५/१४	६/३५
१७	र.	१४	२	३२	स्वा.	०	१३	व्य.	१२	१९	ग.	१३	३९	व.	२	३८				५/१३	६/३५
१८	सो.	१५	४	३६	वि.	२	५२	व.	१२	५९	वि.	१५	३९	व.	४	४०	वृ.	२०	१२	५/१३	६/३६

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (१९ मई से २ जून तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	॰	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१९	मं.	१	सम्पूर्ण		ऽनु.	सम्पूर्ण		प.	१३	३७	वा.	१७	३८	कौ.	सम्पूर्ण					५/१२	६/३६
२०	बु.	१	६	३१	ऽनु.	५	२४	शि.	१४	७	कौ.	६	३५	तै.	१९	२६				५/१२	६/३७
२१	गु.	२	८	१२	ज्ये.	७	४०	सि.	१४	२४	ग.	८	१६	व.	२०	५६	ध.	७	४०	५/१२	६/३७
२२	शु.	३	९	२८	मू.	९	३४	सा.	१४	२१	वि.	९	३५	व.	२२	१				५/१२	६/३८
२३	श.	४	१०	१८	पू.	११	२	शु.	१३	५७	वा.	१०	२९	कौ.	२२	३८	म.	१७	१७	५/११	६/३८
२४	र.	५	१०	३७	उ.	१२	१	शु.	१३	९	तै.	१०	४९	ग.	२२	४५				५/११	६/३९
२५	सो.	६	१०	२५	श्र.	१२	२८	ब्रं.	११	५६	व.	१०	४१	वि.	२२	२२	कुं.	०	१७	५/११	६/३९
२६	मं.	७	९	४२	ध.	१२	२६	ऐं.	१०	१८	व.	१०	३	वा.	२१	३१				५/१०	६/४०
२७	बु.	८	८	३३	श.	११	५७	वै.	८	२१	कौ.	८	५८	तै.	२०	१४				५/१०	६/४०
२८	गु.	९	७/५	०/६	पू.	११	१	वि.	६/३	५/३२	ग.	७	२९	व.	१८	३५	मी.	५	२१	५/१०	६/४१
२९	शु.	११	२	५६	उ.	६	५९	आ.	०	४५	वि.	५	४०	व.	१/१	३८/६६				५/१०	६/४१
३०	श.	१२	०	३६	रे.	८	३४	सौ.	२१	४९	कौ	१४	२६	तै.	१	१७	मे.	८	३४	५/१०	६/४२
३१	र.	१३	२२	९	अ.	७	०	शो.	१८	४८	ग.	१२	४	व.	२२	५१				५/१०	६/४२
१	सो.	१४	१९	४१	भ.	५/३	३/१	ऽगं.	१५	४४	वि.	९	३६	श.	२०	२१	वृ.	१०	५७	५/१०	६/४२
२	मं.	३०	१७	१५	रो.	२	७	सु.	१२	४३	च.	७	८	ना.	१७/४	५४/४४				५/१०	६/४३

Manufacturers
FINE WOOLLEN,
WORSTED
TERENE WOOL,
BLENDED
FABRICS

Specialists
GENTS PURE
WOOL TOOSH
(MAHALAXMI,
LAXMI, GANESH)
LADIES
FANCY SHAWLS





ESSPEE

SUITINGS & SHAWLS

S.P. WORSTED SPINNING MILLS
VERKA, (PUNJAB)

PHONE : 4718
4498

TELEX : SALIG 263
GRAMS SALIG.

सालिगराम पन्नालाल, लक्खी चौतरा, वाराणसी

फोन नं० ५४५२१

शाल, दुशालों का वृहद स्टाक आपकी सेवा में तैयार है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (३ जून से १७ तक)																					
अ.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
३	बु.	१	१४	५७	मृ.	०	४३	धृ.	६	४९	व.	१५	३३	वा.	२	२८	मि.	१३	२५	५/६	६/४६
४	गु.	२	१२	५२	आ.	२३	३३	शू	[illegible]	[illegible]	को	१३	२२	तै.	०	३२				५/६	६/४६
५	शु.	३	११	४	पु.	२२	४४	वृ.	२	१०	ग.	११	४१	व.	२२	५६	क.	१६	५६	५/६	६/४६
६	श.	४	९	३७	पु.	२२	१४	ध्रु.	०	१२	वि.	१०	१०	व.	२१	३९				५/६	६/४६
७	र.	५	८	३२	श्ले	२२	९	व्या.	२२	३४	वा	९	४	कौ	२०	४४	सिं.	२२	९	५/६	६/४७
८	सो.	६	७	५८	म.	२२	३४	ह.	२१	२०	तै.	८	२४	ग.	२०	१९				५/६	६/४७
९	मं.	७	७	५३	पू.	२३	३१	व.	२०	३१	व.	८	१३	वि.	२०	२४				५/६	६/४८
१०	बु.	८	८	२१	उ.	०	५८	सि.	२०	९	व.	८	२४	वा.	२०	५८	कं.	५	५३	५/६	६/४८
११	गु.	९	९	१६	ह.	२	५१	व्य.	२०	३	कौ.	९	२३	तै.	२२	२				५/६	६/४९
१२	शु.	१०	१०	३८	चि.	५	६	व.	२०	२१	ग.	१०	४०	व.	२३	२६	तु	१५	५८	५/६	६/४९
१३	श.	११	१२	२२	स्वा.	सम्पूर्ण		प.	२०	५१	वि.	१२	१८	व.	११	३				५/६	६/४९
१४	र.	१२	१४	२०	स्वा.	७	३९	शि.	२१	१०	वा.	१४	७	कौ	३	११	वृ.	३	३६	५/६	६/५०
१५	सो.	१३	१६	२२	वि.	१०	१५	सि.	२२	१०	तै	१६	१५	ग.	सम्पूर्ण					५/६	६/५०
१६	मं.	१४	१८	१९	अनु.	१२	४८	सा.	२२	४३	ग.	५	१३	व.	१८	११				५/६	६/५१
१७	बु.	१५	१९	५९	ज्ये	१५	९	शु.	२३	४	वि	९	२	व.	९	५३	ध.	१५	९	५/६	६/५१

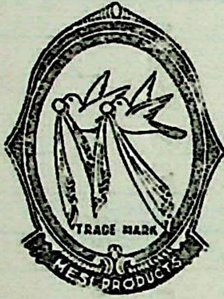
आषाढ़ कृष्ण पक्ष (१८ जून से १ जुलाई तक)																					
अ.ता.	वा.	ति.	घं.	मि	न.	घं	मि	यो	घं.	मि	क.	घ.	मि	क.	घ.	मि.	चं.	घ.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१८	गु.	१	२१	१५	मू.	१७	९	शु.	२३	६	वा.	८	३३	कौ.	२१	१३				५/८	६/४६
१९	शु.	२	२२	६	पू.	१८	४३	ब्रं.	२२	४८	तै.	९	३९	ग.	२२	५	म.	०	५९	५/९	६/५०
२०	श.	३	२२	३५	उ.	१९	४८	ऐं.	२२	५	व.	१०	१६	वि.	२२	२८				५/९	६/५०
२१	र.	४	२२	१४	श्र.	२०	२२	वै.	२०	५८	व.	१०	२४	बा.	२२	२०				५/९	६/५०
२२	सो.	५	२१	३३	ध.	२०	२६	वि	१९	२६	कौ	१०	९	तै.	२१	५८	कुं.	८	२४	५/९	६/५०
२३	मं.	६	२०	२४	श.	२०	४	प्री	१९	२४	ग.	९	१९	व.	२०	४०				५/१०	६/५०
२४	बु.	७	१८	५२	पू.	१९	१९	आ	१५	२१	वि.	७	५६	व.	१९	१२	मी.	१३	३०	५/१०	६/५०
२५	गु.	८	१६	५९	उ.	१८	१३	सौ.	१२	५२	वा.	६	१७	कौ.	१७/२३	२२/९				५/१०	६/५०
२६	शु.	९	१४	५०	रे.	१६	५२	शो	१०	८	ग	१५	१६	व.	२	९	मे.	१६	५२	५/१०	६/५०
२७	श.	१०	१२	३१	अ.	१५	१९	ऽगं	५	९/१४	वि	१२	५७	व.	२३	४२				५/११	६/५१
२८	र.	११	१०	३	भ.	१३	४१	धृ.	१	११	वा.	१०	२८	कौ.	२१	१४	वृ.	१९	१९	५/११	६/५१
२९	सो.	१२	७/५	३/४	कृ.	१२	१	शू.	२२	१०	तै.	८	०	ग.	१८	४६				५/११	६/५१
३०	म.	१४	२	४८	रो	१०	२४	गं.	१९	१२	व.	५	३३	वि.	१९/२९	३/५९	मि.	२१	४०	५/११	६/५१
१	बु.	३०	०	४२	मृ.	८	५८	वृ.	१६	२५	च.	१४	८	ना.	१	३				५/१२	६/५१

आषाढ़ शुक्ल पक्ष (२ जुलाई से १७ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२	गु.	१	२२	५१	आ.	७	४३	ध्रु.	१३	८	कि.	१२	१०	व.	२३	१७	क.	१	२	[illegible]	[illegible]
३	शु.	२	२१	२३	पु.	६	५०	व्या.	११	२६	बा.	१०	२६	कौ.	२१	३४				[illegible]	[illegible]
४	श.	३	२०	१७	पु.	६	१४	ह.	९	२७	तै.	८	५६	ग.	२०	२४				[illegible]	[illegible]
५	र.	४	१९	४०	श्ले.	६	५	व.	७	४६	व.	८	१५	वि.	२०	५	सिं.	१८	५	[illegible]	[illegible]
६	सो.	५	१९	३२	म.	६	२४	सि.	६	२८	व.	७	४५	बा.	१९	२४				[illegible]	[illegible]
७	मं.	६	१९	५७	पू.	७	१८	व्य.	५/४	३५/७	कौ.	७	३५	तै.	१९	४५	कं.	१३	३१	[illegible]	[illegible]
८	बु.	७	२०	४९	उ.	८	३४	व.	४	५६	ग.	८	१०	व.	२०	३४				[illegible]	[illegible]
९	गु.	८	२२	११	.	१०	२२	शि.	५	१३	वि.	९	१२	ब.	२१	५०	तु.	२३	२७	[illegible]	[illegible]
१०	शु.	९	२३	५२	चि.	१२	३३	सि.	सम्पूर्ण		बा.	१०	३६	कौ.	२३	२८				[illegible]	[illegible]
११	श.	१०	१	४९	स्वा.	१५	०	सि.	५	४१	तै.	१२	२६	ग.	१	२२				[illegible]	[illegible]
१२	र.	११	३	५१	वि.	१७	३८	सा.	६	२०	व.	१४	२२	वि.	३	२३	वृ.	१०	५६	[illegible]	[illegible]
१३	सो.	१२	सम्पूर्ण		अनु.	२०	१८	शु.	७	०	व.	१६	२१	बा.	सम्पूर्ण					[illegible]	[illegible]
१४	मं.	१२	५	४७	ज्ये.	२२	३७	शु.	७	३५	बा.	५	१९	कौ.	१८	९	ध.	२२	३७	[illegible]	[illegible]
१५	बु.	१३	७	२६	मू.	०	४८	ब्र.	७	५६	तै.	७	०	गं.	१९	४१				[illegible]	[illegible]
१६	गु.	१४	८	४८	पू.	२	११	ऐं.	८	४	व.	८	२२	वि.	२०	४६				[illegible]	[illegible]
१७	शु.	१५	९	४०	उ.	३	३८	वै.	७	५०	व.	९	१७	बा.	२१	३९	म.	८	४०	[illegible]	[illegible]

श्रावण कृष्ण पक्ष (१८ जुलाई से ३१ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१८	श.	१	१०	२	श्र.	४	१५	वि.	७	११	कौ.	९	४२	तै.	२१	३९				[illegible]	[illegible]
१९	र.	२	९	५३	श्र.	४	२७	प्री.	६/४	२६/१	ग.	९	३७	व.	२१	२१	कुं.	१६	२१	[illegible]	[illegible]
२०	सो.	३	९	१४	ध.	४	१०	आ.	२	५२	वि.	९	४	श.	२०	३३				[illegible]	[illegible]
२१	मं.	४	८	७	पू.	३	२६	सौ.	०	४३	बा.	८	२	कौ.	१९	१९	मी	२१	४०	[illegible]	[illegible]
२२	बु.	५	६/४	३६/४	उ.	२	२७	शो.	२२	१७	तै.	६	३६	ग.	१७/४	४२/६				[illegible]	[illegible]
२३	गु.	७	२	३८	रे.	१	१०	सु.	१९	३७	वि.	१५	४६	श.	२	४४	मे.	१	१०	[illegible]	[illegible]
२४	शु.	८	०	१८	अ.	२३	४०	धृ.	१६	५४	बा.	१३	३६	कौ.	०	२७				[illegible]	[illegible]
२५	श.	९	२१	५२	भ.	२२	२	शू.	१३	४५	तै.	११	१५	ग.	२२	३	वृ.	८	३७	[illegible]	[illegible]
२६	र.	१०	१९	२३	कृ.	२०	२१	गं.	१०	११	व.	८	४८	वि.	१९	३३				[illegible]	[illegible]
२७	सो.	११	१६	५७	रो.	१८	४४	वृ.	७/४	३८/१	व.	६	१९	बा.	१७/२	४/३				[illegible]	[illegible]
२८	मं.	१२	१४	३७	मृ.	१७	१४	ध्या	१	७	तै.	१४	४२	ग.	१	३५	मि.	५	५६	[illegible]	[illegible]
२९	बु.	१३	१२	३०	आ.	१५	५७	व्या.	२३	८	व.	१२	३०	वि.	२३	३८				[illegible]	[illegible]
३०	गु.	१४	१०	३८	पु.	१४	५७	ह.	२०	४४	श.	१०	४९	च.	२१	५६	क.	९	१२	[illegible]	[illegible]
३१	शु.	३०	९	८	पु.	१४	१७	सि.	१८	३८	ना.	९	१३	कि.	२०	३८				[illegible]	[illegible]
																				[illegible]	[illegible]
																				[illegible]	[illegible]



फोन { दुकान ६२८८६
निवास ६४८५६
मिल ६४०५६ }

नव वर्ष के उपलक्ष में आपका हार्दिक अभिनन्दन

मेसी मिल्स

निर्माणकर्ता :—

जारजेट, स्कर्ट, चुनरी, मेसी काटन साड़ियाँ



मेहरा सिल्क मिल्स

एस. १५/६, धौसाबाद

नदेसर, वाराणसी



विक्रेता—मेसी साड़ीज

आर. के. इण्डस्ट्रीज

सी. के. ५८/५५ नार्थ चौक

वाराणसी

श्रावण शुक्ल पक्ष (१ अगस्त से १५ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१	श.	१	८	०	श्ले.	१४	०	व्य.	१६	५	व.	८	३	वा.	१९	४१	सिं.	१४	०	५/[illegible]	६/[illegible]
२	र.	२	७	२२	म.	१४	१४	व.	१५	२८	कौ.	७	२८	तै.	१९	११				५/[illegible]	६/[illegible]
३	सो.	३	७	१२	पू.	१४	५५	प.	१४	२९	ग.	७	४	व.	१९	११	क.	२१	१३	५/[illegible]	६/[illegible]
४	मं.	४	७	३५	उ.	१६	९	शि.	१३	५६	वि.	७	१९	व.	१९	४२				५/[illegible]	६/[illegible]
५	बु.	५	८	२६	ह.	१७	४८	सि.	१३	४२	वा.	८	६	कौ.	२०	४२				५/[illegible]	६/[illegible]
६	गु.	६	९	४६	चि.	१९	५५	सा.	१३	५२	तै.	९	१९	ग.	२२	७	तु.	६	५२	५/[illegible]	६/[illegible]
७	शु.	७	११	२७	स्वा.	२२	१९	शु.	१४	१७	व.	१०	५६	वि.	२३	५३				५/[illegible]	६/[illegible]
८	श.	८	१३	२३	वि.	०	५५	शु.	१४	५३	व.	१२	५०	वा.	१	५१	वृ.	१८	१६	५/[illegible]	६/[illegible]
९	र.	९	१५	२५	ऽनु.	३	३१	ब्रं.	१५	३२	कौ.	१४	५२	तै.	३	५२				५/[illegible]	६/[illegible]
१०	सो.	१०	१७	२४	ज्ये.	सम्पूर्ण		ऐं.	१६	७	ग.	१६	५२	व.	सम्पूर्ण					५/[illegible]	६/[illegible]
११	मं.	११	१९	७	ज्ये.	५	५८	वै.	१६	३३	ब.	५	४५	वि.	१८	३७	ध.	५	५८	५/[illegible]	६/[illegible]
१२	बु.	१२	२०	२०	मू.	८	९	वि.	१६	४३	ब.	७	१९	वा.	२०	१				५/[illegible]	६/[illegible]
१३	गु.	१३	२१	२४	पू.	९	५४	प्री.	१६	३०	कौ.	८	४१	तै.	२१	२१	म.	१६	१४	५/[illegible]	६/[illegible]
१४	शु.	१४	२१	४९	उ.	११	१३	आ.	१५	५७	गं.	९	२५	व.	२१	२९				५/[illegible]	६/[illegible]
१५	श.	१५	२१	४३	श्र.	१२	१	सौ.	१४	५८	वि.	९	२९	व.	२१	२८	कुं.	०	१०	५/[illegible]	६/[illegible]

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (१६ अगस्त से २९ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१६	र.	१	२१	७	ध.	१२	२०	शो.	१३	३६	वा.	९	१३	कौ.	२०	५७				५/[illegible]	६/[illegible]
१७	सो.	२	२०	२	श.	१२	८	ऽगं.	११	४९	तै.	८	२८	ग.	१९	५८				५/[illegible]	६/[illegible]
१८	मं.	३	१८	३४	पू.	११	३२	सु.	९	४४	व.	७	१७	वि.	१८	३५	मी.	५	४१	५/[illegible]	६/[illegible]
१९	बु.	४	१६	४५	उ.	१०	३६	धृ.	[illegible]	[illegible]	व.	५	४३	वा.	[illegible]	[illegible]				५/[illegible]	६/[illegible]
२०	गु.	५	१४	३९	रे.	९	५०	गं.	१	४७	तै.	१४	४८	ग.	१	३९	मे.	९	१०	५/[illegible]	६/[illegible]
२१	शु.	६	१२	२२	अ.	७	५२	वृ.	२२	४७	व.	१२	३१	वि.	२३	१८				५/[illegible]	६/[illegible]
२२	श.	७	९	५५	भ.	[illegible]	[illegible]	ध्रु.	१९	४३	व.	१०	५	वा.	२०	५१	वृ.	११	५०	५/[illegible]	६/[illegible]
२३	र.	८	[illegible]	[illegible]	रो.	२	५५	व्या.	१६	३७	कौ.	७	३८	तै.	[illegible]	[illegible]				५/[illegible]	६/[illegible]
२४	सो.	१०	२	४३	मृ.	१	२३	ह.	१३	३७	व.	१६	३	वि.	२	५३	मि.	१४	९	५/[illegible]	६/[illegible]
२५	मं.	११	०	३५	आ.	०	१	व.	१०	४१	व.	१३	४८	वा.	०	४३				५/[illegible]	६/[illegible]
२६	बु.	१२	२२	४४	पु.	२२	५६	सि.	[illegible]	[illegible]	कौ.	११	४६	तै.	२२	४९	क.	१७	१२	५/[illegible]	६/[illegible]
२७	गु.	१३	२१	१२	पु.	२२	११	व.	३	१७	ग.	१०	२	व.	२१	१४				५/[illegible]	६/[illegible]
२८	शु.	१४	२०	५	श्ले.	२१	४१	प.	१	२५	वि.	८	३९	श.	२०	२	सिं.	२१	४९	५/[illegible]	६/[illegible]
२९	श.	३०	१९	२५	म.	२१	५३	शि.	२३	५४	च.	७	१२	ना.	१९	४२				५/[illegible]	६/[illegible]

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (३० अगस्त से १४ सितम्बर तक)

अ. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
३०	र.	१	१९	१५	पू.	२२	२८	सि.	२२	४९	कि.	७	२३	व.	१९	३	कं.	४	४४	५/४०	६/१७
३१	सो.	२	१९	३६	उ.	२३	३३	सा.	२२	७	वा.	७	३४	कौ.	१९	२०				५/४०	६/१६
१	मं.	३	२०	२८	ह.	१	५	शु.	२१	४८	तै.	७	४४	ग.	२०	७				५/४०	६/१५
२	बु.	४	२१	४७	चि.	३	९	शु.	२१	५१	व.	८	४६	वि.	२१	२३	तु.	१४	६	५/४१	६/१४
३	गु.	५	२३	२८	स्वा.	५	२६	ब्रं.	२२	१२	व.	१०	१४	वा.	२३	३				५/४१	६/१३
४	शु.	६	१	२४	वि.	सम्पूर्ण		ऐं.	२२	४३	कौ.	१२	१	तै.	०	५९	वृ.	१	२१	५/४१	६/१२
५	श.	७	३	२८	वि.	८	०	वै.	२३	२२	ग.	१४	१	व.	३	२				५/४२	६/११
६	र.	८	५	२७	ऽनु.	१०	३७	वि.	२३	५८	वि.	१६	३	व.	५	३				५/४२	६/१०
७	सो.	९	सम्पूर्ण		ज्ये.	१३	७	प्री.	०	२५	वा.	१७	५७	कौ.	सम्पूर्ण		ध.	१३	७	५/४३	६/९
८	मं.	९	७	१४	मू.	१५	२१	आ.	०	३९	कौ.	६	५१	तै.	१९	३४				५/४३	६/८
९	बु.	१०	८	३९	पू.	१७	१२	सौ.	०	२७	ग.	८	१८	व.	२०	४९	म.	२२	३३	५/४३	६/७
१०	गु.	११	९	३९	उ.	१८	३८	शो.	२३	५९	वि.	९	२०	व.	२१	३५				५/४४	६/६
११	शु.	१२	१०	५	श्र.	१९	३२	ऽगं.	२३	४	वा.	९	५२	कौ.	२१	५३				५/४४	६/५
१२	श.	१३	१०	१	ध.	१९	५६	सु.	२१	४५	तै.	९	५४	ग.	२१	४२	कुं.	७	४४	५/४४	६/४
१३	र.	१४	९	२९	श.	१९	५१	धृ.	२०	३	व.	९	३०	वि.	२१	०				५/४५	६/४
१४	सो.	१५	८	२७	पू.	१९	२०	शू.	१७	५९	व.	८	३०	वा.	१९	४९	मी	१३	२८	५/४५	६/३

आश्विन कृष्ण पक्ष (१५ सितम्बर से २८ तक)

अ. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१५	मं.	१	७/७	०/१२	उ.	१८	२९	गं.	१५	३६	कौ.	७	९	तै.	१८/२३	१८/३३				५/४५	६/१
१६	बु.	३	३	१०	रे.	१७	१७	वृ.	१२	५८	व.	१९	२८	वि.	३	२८	मे.	१७	१७	५/४६	६/०
१७	गु.	४	०	५४	अ.	१५	५१	ध्रु.	१०	६	व.	१४	२२	वा.	१	१४				५/४६	५/५९
१८	शु.	५	२२	३०	भ.	१४	१४	व्या.	७/४	६/१	कौ.	१२	४	तै.	२२	५३	वृ.	१९	४९	५/४६	५/५८
१९	श.	६	२०	३	कृ.	१२	३४	व.	०	५४	ग.	९	४०	व.	२०	२६				५/४७	५/५७
२०	र.	७	१७	३८	रो.	१०	५४	सि.	२१	५०	व्रि.	७	१४	व.	१८/२०	१/५६	मि.	२२	६	५/४७	५/५६
२१	सो.	८	१५	२०	मृ.	९	२०	व्य.	१८	५३	कौ.	१५	३८	तै.	२	३३				५/४८	५/५४
२२	मं.	९	१३	१५	आ.	७	५४	व.	१६	४	ग.	१३	३०	व.	०	४०	क.	१	१	५/४८	५/५३
२३	बु.	१०	११	२४	पु.	६	४४	प.	१३	३०	वि.	११	४८	व.	२३	५				५/४९	५/५२
२४	गु.	११	९	५३	पु.	५/५	५५/२६	शि.	११	१२	वा.	१०	१९	कौ.	२१	४१	सिं.	५	२६	५/४९	५/५१
२५	शु.	१२	८	४८	म.	५	२५	सि.	९	१४	तै.	९	७	ग.	२०	४५				५/५०	५/५०
२६	श.	१३	८	८	पू.	सम्पूर्ण		सा.	७	३६	व.	८	२४	वि.	२०	१७				५/५०	५/४९
२७	र.	१४	७	५९	पू.	५	५१	शु.	२/६	२२/३२	श.	८	११	चतु	२०	१६	कं.	१२	६	५/५१	५/४७
२८	सो.	३०	८	२१	उ.	६	४९	ब्रं.	५	७	ना.	८	२१	किं.	२०	५२				५/५१	५/४६

आश्विन शुक्ल पक्ष (२९ सितम्बर से १३ अक्टूबर तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
२९	:	१	९	१५	ह.	८	१८	ऐं.	५	३	व.	६	१६	वा.	२१	५४	तु.	२१	१४	५/५२	५/४७
३०	बु.	२	१०	३५	चि.	१०	१२	वैं.	५	१८	कौ.	१०	३६	तै.	२३	२२				५/५२	५/४६
१	गु.	३	१२	१७	स्वा.	१२	२७	वि.	५	४४	ग.	१२	१२	व.	१	६				५/५२	५/४५
२	शु.	४	१४	१६	वि.	१४	५६	प्री.	सम्पूर्ण		वि.	१४	७	व.	३	११	वृ.	८	२१	५/५३	५/४४
३	श.	५	१६	२१	अनु.	१७	३५	प्री.	६	२१	वा.	१६	१५	कौ.	५	१९				५/५३	५/४३
४	र.	६	१८	२३	ज्ये	२०	८	आ.	६	५५	तै.	१८	२०	ग.	सम्पूर्ण		ध.	२०	८	५/५३	५/४०
५	सो.	७	२०	११	मू.	२२	२७	सौ.	७	२४	ग.	७	१५	व.	२०	१०				५/५४	५/३९
६	मं.	८	२१	३७	पू.	०	२५	शो.	७	३८	वि.	८	५६	व.	२१	४१				५/५४	५/३८
७	बु.	९	२२	३७	उ.	१	५७	अं.	७	३५	वा.	१०	१३	कौ.	२२	४४	म.	१८	४९	५/५५	५/३७
८	गु.	१०	२३	६	श्र.	२	५६	सु.	७	६	तै	११	२	ग.	२३	१६				५/५५	५/३६
९	शु.	११	२३	८	ध.	३	३१	धृ.	[illegible]		व.	११	२१	वि.	२३	२३	कुं.	१५	१६	५/५६	५/३५
१०	श.	१२	२२	३८	श.	३	३४	गं.	३	२६	व.	११	१०	वा.	२२	५७				५/५६	५/३४
११	र.	१३	२१	३८	पू.	३	८	वृ.	१	२५	कौ.	१०	३०	तै.	२२	२	मी.	२१	१४	५/५६	५/३३
१२	सो.	१४	२०	१५	उ.	२	२३	ध्रु.	२३	७	ग.	६	२३	व.	२०	४३				५/५७	५/३२
१३	मं.	१५	१८	३०	रे.	१	१५	व्या.	२०	३०	वि	७	५३	व.	१२/२३	४/२	मे.	१	१५	५/५७	५/३१

कार्तिक कृष्ण पक्ष (१४ अक्टूबर से २७ तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	कं.	घं.	मि.	क.	घ.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१४	बु.	१	१६	२६	अ.	२३	५३	ह.	१९	४१	कौ.	१७	४	तै.	३	५७				५/५८	५/३०
१५	गु.	२	१४	१४	भ.	२२	१६	व.	१४	४२	ग.	१४	५१	व.	१	३६	वृ.	३	५४	५/५८	५/२९
१६	शु.	३	११	५३	कृ.	२०	४१	सि.	११	३७	वि.	१२	३०	व.	२३	१८				५/५९	५/२८
१७	श.	४	६	२७	रो.	१८	५६	व्य.	६	३/४	वा.	१०	६	कौ.	२०	५४				५/५९	५/२७
१८	र.	५	४/४	४/१२	मृ.	१७	२३	प.	२	२०	तै.	७	४५	ग.	१६/२३	३५/८	मि.	६	१२	६/०	५/२६
१९	सो.	७	२	४४	आ.	१५	५५	शि.	२३	२६	वि.	१६	२४	व.	३	२१				६/०	५/२५
२०	मं.	८	०	५५	पु.	१४	४२	सि.	२०	४७	वा.	१४	२६	कौ.	१	३०	क.	६	०	६/१	५/२४
२१	बु.	९	२३	२७	पु.	१३	४८	सा.	१८	२३	तै.	१२	४४	ग.	२३	५८				६/२	५/२३
२२	गु.	१०	२२	२२	श्ले.	१३	१३	शु.	१६	१६	व.	११	२५	वि.	२२	५१	सिं.	१३	१३	६/२	५/२२
२३	शु.	११	२१	४६	म.	१३	४	शु.	१४	३१	व.	१०	३१	वा.	२२	१०				६/३	५/२१
२४	श.	१२	२१	३८	पू.	१४	२४	ब्रं.	१३	६	कौ.	१०	४	तै.	२१	५९	कं.	१९	३६	६/३	५/२०
२५	र.	१३	२२	३	उ.	१४	१४	ऐं.	१२	११	ग.	१०	६	व.	२२	२०				६/४	५/२०
२६	सो.	१४	२२	५८	ह.	१५	३५	वै.	११	३७	वि.	१०	४५	श.	२३	८	तु.	४	२८	६/४	५/१९
२७	मं.	३०	०	२१	चि.	१७	२३	वि.	११	२५	च.	११	५०	ना.	०	३०				६/५	५/१८

कार्तिक शुक्ल पक्ष (२८ अक्टूबर से ११ नवम्बर तक)

अ.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
२८	बु.	१	२	६	स्वा	१६	३३	प्री.	११	३२	किं.	१३	२३	व.	२	१४				६/५	५/२८
२९	गु.	२	४	८	वि.	२२	१	आ.	११	५६	वा.	१५	१५	कौ.	४	१४	वृ.	१५	२४	६/६	५/२७
३०	शु.	३	सम्पूर्ण		ऽनु.	०	३८	सौ.	०	२७	तै.	१७	१८	ग.	६	२२				६/६	५/२६
३१	श.	३	६	१७	ज्ये.	३	१३	शो.	१३	२३	व.	१९	२४	वि.	सम्पूर्ण		ध.	३	१३	६/७	५/२५
१	र.	४	८	२१	मू.	५	३६	ऽगं.	१३	३२	वि.	८	२७	व.	२१	२२				६/८	५/२४
२	सो.	५	१०	११	पू.	सम्पूर्ण		सु.	१३	५१	वा.	१०	१७	कौ.	२३	३				६/९	५/२४
३	मं.	६	११	३९	पू.	७	४१	धृ.	१३	५१	तै.	११	४६	ग.	०	२१	म.	१४	५	६/९	५/२३
४	बु.	७	१२	४०	उ.	९	१६	शू.	१३	३०	व.	१२	५५	वि.	१	१८				६/१०	५/२२
५	गु.	८	१३	१२	श्र.	१०	२८	गं.	१२	४४	व.	१३	४३	वा.	१	४५	कुं.	२२	४८	६/१०	५/२२
६	शु.	९	१३	१३	ध.	११	९	वृ.	११	३७	कौ.	१३	४७	तै.	१	३३				६/११	५/२१
७	श.	१०	१२	४५	श.	११	१६	ध्रु.	१०	४	ग.	१३	२०	व.	०	४७	मी.	५	५	६/१२	५/२१
८	र.	११	११	४६	पू.	११	०	व्या	[illegible]	[illegible]	वि.	१२	१५	व.	२३	३५				६/१२	५/२१
९	सो.	१२	१०	२५	उ	१०	१९	ह.	३	२३	वा.	१०	५६	कौ.	२२	५				६/१३	५/२०
१०	मं.	१३	८	४२	रे.	९	१६	सि.	०	३६	तै.	९	१५	ग.	२०	१९	मे.	९	१६	६/१४	५/२०
११	बु.	१४	[illegible]	[illegible]	अ.	७	५८	व्य.	२१	३९	व.	७	१८	वि.	[illegible]	[illegible]				६/१४	५/२०

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (१२ नवम्बर से २६ तक)

अ.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१२	गु.	१	२	९	भ.	[illegible]	[illegible]	व.	१८	३४	वा.	१५	५८	कौ.	२	४८	वृ.	१२	२	६/१५	५/१९
१३	शु.	२	२३	४७	रो.	३	७	प.	१५	२७	तै.	१३	३७	ग.	०	२५				६/१६	५/१९
१४	श.	३	२१	२५	मृ.	१	२९	शि.	१२	१७	व.	११	१५	वि.	२२	३	मि.	१४	१८	६/१६	५/१९
१५	र.	४	१९	१२	आ.	०	०	सि.	[illegible]	[illegible]	व.	८	५५	वा.	१९	४७				६/१७	५/१८
१६	सो.	५	१७	९	पु.	२२	४२	पु.	३	२९	कौ.	६	४४	तै.	[illegible]	[illegible]	क.	१७	१	६/१८	५/१८
१७	मं.	६	१५	२२	पु.	२१	४२	शु.	१	०	व.	१५	५१	वि.	३	५				६/१९	५/१८
१८	बु.	७	१३	५६	श्ले.	२१	२	ब्रं.	२२	४६	ब.	१४	२०	बा.	१	४७	सिं.	२१	२	६/२०	५/१७
१९	गु.	८	१२	५४	म.	२०	४६	ऐं.	२०	५२	का.	१३	१४	तै.	०	५४				६/२०	५/१७
२०	शु.	९	१२	२०	पू.	२१	०	वै.	१९	२१	ग.	१२	३५	व.	०	३१	कं.	३	१०	६/२१	५/१७
२१	श.	१०	१२	१७	उ.	२१	४३	वि.	१८	१५	वि.	१२	२७	व.	०	३९				६/२२	५/१७
२२	र.	११	१२	४५	ह.	२२	५७	प्री.	१७	३२	बा.	१२	५२	कौ.	१	२०				६/२२	५/१७
२३	सो.	१२	१३	४३	चि.	०	३७	आ.	१७	११	त.	१३	४८	ग.	२	३१	तु.	११	४७	६/२३	५/१७
२४	मं.	१३	१५	१२	स्वा	२	४४	सौ.	१७	१२	व.	१५	१४	वि.	४	८				६/२४	५/१७
२५	बु.	१४	१६	५८	वि.	५	८	शो.	१७	२९	श.	१७	२	च.	६	४	वृ.	२२	३२	६/२४	५/१६
२६	गु.	३०	१९	२	ऽनु.	सम्पूर्ण		ऽगं.	१७	५८	ना.	१९	७	कि.	सम्पूर्ण					६/२५	५/१६

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (२७ नवम्बर से ११ दिसम्बर तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२७	शु.	१	२१	१२	ऽनु.	७	४५	मु.	१८	३२	कि.	८	१२	व.	२१	१७				[illegible]	५/५
२८	श	२	२३	१६	ज्ये.	१०	२१	वृ.	१६	३	वा.	१०	२१	कौ.	२३	२८	ध.	१०	२१	[illegible]	५/५
२९	र.	३	१	१०	मू.	१२	४८	ध्रु.	१६	२४	तै.	१२	२०	ग.	१	१५				[illegible]	५/५
३०	सो.	४	२	३८	पू.	१४	५७	गं.	१९	२८	व.	१४	१	वि.	२	४६	म.	२१	२३	[illegible]	५/५
१	मं.	५	३	४१	उ.	१६	४२	वृ.	१९	१३	व.	१५	१८	वा.	३	५०				[illegible]	५/५
२	बु.	६	४	१३	श्र.	१८	२	ध्रु.	१८	३७	कौ.	१६	७	तै.	४	२४	कुं.	६	२४	[illegible]	५/५
३	गु.	७	४	१३	ध.	१८	४९	व्या	१७	३९	ग.	१६	२६	व.	४	२७				[illegible]	५/५
४	शु.	८	३	४३	श.	१९	५	ह.	१६	११	वि.	१६	१४	व.	४	१				[illegible]	५/५
५	श.	९	२	४५	पू.	१८	५४	व.	१४	२२	वा.	१५	३४	कौ.	३	७	मी.	१२	५७	[illegible]	५/५
६	र.	१०	२	२४	उ	१८	१७	सि.	१२	१४	तै.	१४	२७	ग.	१	४७				[illegible]	५/५
७	सो.	११	२३	४२	रे.	१७	२१	व्य.	९	४८	व.	१२	५७	वि.	०	७	मे.	१७	२१	[illegible]	५/५
८	मं.	१२	२१	४३	अ.	१६	४	व.	७/४	५/६	व.	११	८	वा.	२२	९				[illegible]	५/६
९	बु.	१३	१९	३२	भ.	१४	३६	शि.	१	६	कौ.	९	४	तै.	१९	५८	वृ.	२०	१२	[illegible]	५/६
१०	गु.	१४	१७	१३	कृ.	१२	५६	सि.	२१	५८	ग.	६	४८	वा.	१७/४	३८/२९				[illegible]	५/६
११	शु	१५	१४	५२	रो.	११	२२	सा.	१८	४८	व.	१५	१४	वा.	२	२	मि.	२२	३२	[illegible]	५/६

पौष कृष्ण पक्ष (१२ दिसम्बर से २६ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१२	श.	१	१२	३२	मृ.	६	४२	शु.	१५	४१	कौ.	१२	५१	तै.	२३	४७				[illegible]	५/७
१३	र.	२	१०	२२	आ.	८	७	शु.	१२	४१	ग.	१०	४३	व.	२१	४३	क.	१	५	[illegible]	५/७
१४	सो.	३	८/६	२२/३८	पु.	६/५	४९/४०	ब्रं.	६	५१	वि.	८	४३	व.	१९	५०				[illegible]	५/७
१५	मं.	५	५	१६	पु.	४	५७	ऐं.	७/४	१४/५४	वा.	६	५६	कौ.	१८/५	१३/३०	सि.	४	५७	[illegible]	५/७
१६	बु.	६	४	१६	मं.	४	३५	वि.	२	५२	ग.	१६	५९	व.	४	२८				[illegible]	५/८
१७	गु.	७	३	४६	पू.	४	४२	प्री.	१	१२	वि.	१६	११	व.	३	५४				[illegible]	५/८
१८	शु.	८	३	४६	उ.	५	१८	आ.	२३	५५	वा.	१५	५१	कौ.	३	४९	कं.	१०	५१	[illegible]	५/९
१९	श.	९	४	१८	ह.	६	२६	सौ.	२३	३	तै.	१६	३	ग.	४	१६				[illegible]	५/९
२०	र.	१०	५	१९	चि.	सम्पूर्ण		शो.	२२	३५	व.	१६	४५	वि.	५	१३	तु.	१९	१२	[illegible]	५/१०
२१	सो.	११	सम्पूर्ण		चि.	८	१	ऽगं.	२२	२८	व.	१७	५६	बा.	६	३६				[illegible]	५/१०
२२	मं.	११	६	४८	स्वा	१०	२	सु.	२२	४०	कौ.	१९	३३	तै.	सम्पूर्ण		वृ.	५	४८	[illegible]	५/११
२३	बु.	१२	८	३६	वि.	१२	२४	वृ.	२८	४	तै.	८	२७	ग.	२१	२६				[illegible]	५/११
२४	गु.	१३	१०	४५	ऽनु.	१४	५८	शू.	२३	३६	व.	१०	३१	वि.	२३	३६				[illegible]	५/१२
२५	शु.	१४	१२	५६	ज्ये.	१७	३७	गं.	०	९	श.	१२	४०	च.	१	४६	ध.	१७	३७	[illegible]	५/१२
२६	श.	३०	१५	१	मू.	२०	७	वृ.	०	३२	ना.	१४	५१	कि.	३	४७				[illegible]	५/१३

अ. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२७	र.	१	१६	५८	पू.	२२	२२	ध्रु.	०	४१	व.	१६	४३	वा	५	२८	म.	४	५०	६/४७	५/२४
२८	सो.	२	१८	१९	उ	०	१३	व्या	०	३५	कौ.	१८	१३	तै.	६	४५				६/४५	५/२५
२९	मं.	३	१९	१६	ऋ.	१	३१	ह.	०	९	ग.	१६	१५	व.	सम्पूर्ण					६/४७	५/२५
३०	बु.	४	१६	४६	ध.	२	३३	व.	२३	१३	व.	७	३१	वि	१६	४९	कुं.	१४	६	६/४७	५/२६
३१	गु.	५	१६	४८	श.	२	५७	सि	२१	५६	व.	९	४९	वा.	१६	४८				६/४६	५/२६
१	शु.	६	१९	१५	पू.	२	५२	व्य	२०	१५	कौ.	७	३२	तै.	१६	१६	मी.	२०	५४	६/४६	५/२७
२	श.	७	१८	१५	उ.	२	२१	व.	१८	१३	ग.	६	५१	व.	[illegible]	[illegible]				६/४६	५/२७
३	र.	८	१६	५१	रे.	१	३०	प.	१५	५२	व.	१७	१	वा.	४	१९	मे.	१	३०	६/४६	५/२८
४	सो.	९	१५	९	अ.	०	१८	शि.	१३	१२	कौ.	१५	१८	तै.	२	१६				६/४६	५/२९
५	मं.	१०	१३	९	भ.	२२	५३	सि	१०	२३	ग.	१३	१६	व.	०	११	वृ.	४	२९	६/४७	५/३०
६	बु.	११	१०	५५	कृ.	२१	१८	सा	[illegible]	[illegible]	वि.	११	२	व.	२१	५३				६/४७	५/३०
७	गु.	१२	[illegible]	[illegible]	रो	१६	३९	शु.	१	२	वा.	८	४४	कौ	[illegible]	[illegible]				६/४७	५/३१
८	शु.	१३	३	५५	मृ.	१७	५८	ब्रं.	२१	५६	ग	१९	१२	व.	४	३	मि.	६	४७	६/४७	५/३१
९	श.	१५	१	४५	आ	१६	२३	ऐं.	१८	५३	वि.	१२	५७	व.	१	५०				६/४७	५/३२

माघ कृष्ण पक्ष (१० जनवरी से २५ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	कं.	घं.	मि.	क.	घ.	मि.	चं.	घ.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१०	र.	१	२३	४६	पु.	१४	५६	वै.	१५	५७	वा.	१२	५०	कौ.	२३	४६	क.	६	२१	६/४७	५/३३
११	सो.	२	२२	५	पु.	१३	५१	वि.	१३	१९	तै.	१०	५७	ग.	२२	४				६/४८	५/३४
१२	मं.	३	२०	४४	श्ले.	१३	३	प्री.	१८	४६	व.	६	२२	वि.	२०	३६	सिं.	१३	३	६/४८	५/३४
१३	बु.	४	१६	४८	म.	१२	३६	आ.	९	४१	व.	८	६	वा.	१२	३६				६/४८	५/३५
१४	गु.	५	१६	२०	पू.	१२	३५	सौ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	७	२३	तै.	१६	७	कं.	१८	४२	६/४८	५/३६
१५	शु.	६	१६	२३	उ.	१३	३	ऽगं.	४	२९	ग.	७	६	व.	१६	६				६/४८	५/३७
१६	श.	७	१६	५८	ह.	१४	३	सु.	३	५१	वि.	७	२१	व.	१६	३७	तु.	२	४८	६/४८	५/३७
१७	र.	८	२१	०	चि.	१५	३१	धृ.	३	३५	वा.	८	७	कौ.	२०	३८				६/४७	५/३८
१८	सो.	९	२२	३१	स्वा.	१७	२७	शू.	३	४१	तै.	६	२२	ग.	२६	७				६/४७	५/३९
१९	मं.	१०	०	२३	वि.	१६	४४	गं.	१	२	व.	११	२	वि.	२३	५८	वृ.	१३	१०	६/४७	५/४०
२०	बु.	११	२	३०	ऽनु.	२२	१६	वृ.	१	३३	व.	१३	१	वा.	२	४				६/४७	५/४०
२१	गु.	१२	४	४१	ज्ये.	०	५५	ध्रु.	१	६	कौ	१५	६	तै.	४	१४	ध.	०	५४	६/४७	५/४१
२२	शु.	१३	६	४५	मू.	३	२७	व्या.	५	३१	ग.	१७	१६	व.	६	१८				६/४७	५/४२
२३	श.	१४	सम्पूर्ण		पू.	५	४६	ह.	५	५१	वि.	१९	१२	श.	सम्पूर्ण					६/४७	५/४३
२४	र.	१४	८	३३	उ.	सम्पूर्ण		व.	५	५०	श.	८	७	च.	२०	५०	म.	१२	१४	६/४६	५/४३
२५	सो.	३०	६	५८	उ.	७	४२	सि.	५	२८	ना.	६	३१	किं.	२२	४				६/४६	५/४४

माघ शुक्ल पक्ष (२६ जनवरी से ८ फरवरी तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२६	मं.	१	१०	५६	श्र.	६	१४	व्य.	४	४४	व.	१०	३३	वा.	२२	३४	कुं.	२१	४५	६ ४६	५ ३५
२७	बु.	२	११	२२	ध.	१०	१५	व.	३	३५	कौ.	११	२	तै.	२२	१				६ ४५	५ ३६
२८	गु.	३	११	१७	श.	१०	४५	प.	२	२	ग.	१०	५८	व.	२२	४३	मी.	४	४७	६ ४५	५ ३७
२९	शु.	४	१०	४२	पू.	१०	४७	शि.	०	७	वि.	१०	२८	व.	२१	५९				६ ४४	५ ३७
३०	श.	५	९	३९	उ.	१०	२०	सि.	२१	५१	वा.	९	२८	कौ.	२०	४७				६ ४४	५ ३८
३१	र.	६	८/९	१३/२७	रे.	९	३४	सा.	१९	२०	तै.	८	५	ग.	[illegible]	[illegible]	मे.	९	३४	६ ४४	५ ३९
१	सो.	८	४	२५	अ.	८	२६	शु.	१६	३४	वि.	१७	२१	व.	४	२०				६ ४४	५ ३९
२	मं.	९	२	११	भ.	७/५	३/१९	शु.	१३	३५	वा.	१५	१५	कौ.	२	१०	वृ.	१२	३९	६ ४३	५ ४०
३	बु.	१०	२३	५१	रो.	३	५०	ब्र.	१०	३०	तै.	१३	०	ग.	२३	५०				६ ४३	५ ४१
४	गु.	११	२१	२८	मृ.	२	९	ऐं.	७/४	२/२	व.	१०	३८	वि.	२१	२७	मि.	१४	५९	६ ४२	५ ४२
५	शु.	१२	१९	९	आ.	०	३३	वि.	१	७	व.	८	१६	वा.	१/२	१/३ ६/३८				६ ४२	५ ४२
६	श.	१३	१६	५७	पु.	२३	६	प्री.	२२	८	तै.	१६	५२	ग.	३	५२	क.	१७	२७	६ ४१	५ ४३
७	र.	१४	१४	५८	पु.	२१	५२	आ.	१९	२१	व.	१४	५०	वि.	१	५८				६ ४०	५ ४४
८	सो.	१५	१३	१८	श्ले.	२१	०	सौ.	१६	५०	व.	१३	५	बा.	०	२९	सिं.	२१	०	६ ४०	५ ४४

फाल्गुन कृष्ण पक्ष (९ फरवरी से २३ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
९	मं.	१	११	५७	म.	२०	२६	शो.	१४	३५	कौ.	११	५४	तै.	२३	२५				६ ३९	५ ४५
१०	बु.	२	११	३	पू.	२०	१६	ऽगं.	१२	४१	ग.	१०	५७	व.	२२	४२	कं.	२	२५	६ ३९	५ ४६
११	गु.	३	१०	३६	उ.	२०	४१	सु.	११	८	वि.	१०	२८	व.	२२	२८				६ ३८	५ ४७
१२	शु.	४	१०	३६	ह.	२१	३२	धृ.	९	५९	वा.	१०	२८	कौ.	२२	४४				६ ३७	५ ४७
१३	श.	५	११	१७	चि.	२२	५६	शू.	९	१७	तै.	१०	५९	ग.	२३	२४	तु.	१०	१४	६ ३७	५ ४७
१४	र.	६	१२	२०	स्वा.	०	४५	ग.	८	५६	व.	११	४९	वि.	०	३६				६ ३६	५ ४८
१५	सो.	७	१३	५६	वि.	२	५८	वृ.	८	५७	व.	१३	२२	वा.	२	१९	वृ.	२०	२५	६ ३५	५ ४९
१६	मं.	८	१५	४७	ऽनु.	५	२७	ध्रु.	९	१५	कौ.	१५	१९	तै.	४	२०				६ ३५	५ ४९
१७	बु.	९	१७	५१	ज्ये.	सम्पूर्ण		व्या.	९	४४	ग.	१७	४३	व.	सम्पूर्ण					६ ३४	५ ५०
१८	गु.	१०	२०	०	ज्ये.	८	३	ह.	१०	१८	व.	६	२८	वि.	१९	३४	ध.	८	३	६ ३३	५ ५०
१९	शु.	११	२२	१	मू.	१०	३८	व.	१०	४९	व.	८	३५	वा.	२१	३७				६ ३२	५ ५१
२०	श.	१२	२३	४६	पू.	१२	५९	सि.	११	९	कौ	१०	३०	तै.	२३	२४	म.	१९	३०	६ ३१	५ ५२
२१	र.	१३	१	७	उ.	१५	३	व्य.	११	१७	ग.	१२	५	व.	०	४७				६ ३१	५ ५२
२२	सो.	१४	२	१	श्र.	१६	३९	व.	११	२	वि.	१३	१५	श.	१	४४	कुं.	५	१३	६ ३०	५ ५२
२३	मं.	१५	२	२४	ध.	१७	४७	प.	१०	२७	च.	१३	५६	ना.	२	९				६ २९	५ ५३

फाल्गुन शुक्ल पक्ष (२४ फरवरी से ९ मार्च तक)

अ.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
२४	बु.	१	२	१४	श.	१८	१४	शि.	९	२६	कि.	१४	६	व.	२	४				६ २८	५ ५५
२५	गु.	२	१	३५	पू.	१८	३२	सि.	८/९	५ २/५	वा.	१३	४६	कौ.	१	२९	मी.	१२	३०	६ २७	५ ५५
२६	शु.	३	०	२८	उ.	१८	१२	शु.	४	७	तै.	१२	५८	ग.	०	२७				६ २६	५ ५६
२७	श.	४	२३	०	रे.	१७	२९	शु.	१	४२	व.	११	४४	वि.	२३	१	मे.	१७	२९	६ २६	५ ५६
२८	र.	५	२१	१०	अ.	१६	२५	ब्रं.	२३	०	व.	१०	६	वा.	२१	१५				६ २५	५ ५७
१	सो.	६	१९	६	भ.	१५	४	ऐं.	२०	५	कौ.	८	१४	तै.	१९/९	१३/९	वृ.	२०	४२	६ २४	५ ५८
२	मं.	७	१६	४९	कृ.	१३	३२	वै.	१७	२	व.	१६	५८	वि.	३	४७				६ २३	५ ५८
३	बु.	८	१४	२८	रो.	११	५४	वि.	१३	५५	व.	१४	३५	वा.	१	२४	मि.	२३	३	६ २२	५ ५९
४	गु.	९	१२	३	मृ.	१०	१२	प्री.	१०	४५	कौ.	१२	१२	तै.	२३	२				६ २१	५ ५९
५	शु.	१०	९	४२	आ.	८	३४	आ.	७/४	२/३ ९/०	ग.	९	५२	व.	२०	४७	क.	१	२८	६ २०	६ ०
६	श.	११	७/५	३/३ ०/२	पु.	७/८	४/४ ५/२	शो.	१	५०	वि.	७	४०	व.	१/२ ८/३	४/३ १/०				६ १९	६ ०
७	र.	१३	३	५०	आ.	४	५१	गं.	२३	१४	कौ.	१६	४९	तै.	३	५८	सि.	४	५१	६ १८	६ १
८	सो.	१४	२	३०	म.	४	१३	सु.	२०	५५	ग.	१५	१७	व.	२	३६				६ १७	६ १
९	मं.	१५	१	३४	पु.	३	५९	धृ.	१८	५५	वि.	१४	७	व.	१	३८				६ १६	६ २

चैत्र कृष्ण पक्ष (१० मार्च से २५ तक)

अ.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१०	बु.	१	१	९	उ.	४	१५	शू.	१७	१७	वा.	१३	२३	कौ.	१	९	कुं.	१०	२	६ १५	६ २
११	गु.	२	१	१२	ह.	५	०	ग.	१६	४	तै.	१३	९	ग.	१	१०				६ १४	६ ३
१२	शु.	३	१	४९	चि.	सम्पूर्ण		वृ.	१५	१५	व.	१३	२५	वि.	१	४२	तु.	१७	३८	६ १३	६ ३
१३	श.	४	२	५३	चि.	६	१६	ध्रु.	१४	५०	व.	१४	१२	वा.	२	४४				६ १२	६ ४
१४	र.	५	४	२५	स्वा.	७	५८	व्या.	१४	४६	कौ.	१५	१६	तै.	४	१३	वृ.	३	३५	६ ११	६ ४
१५	सो.	६	सम्पूर्ण		वि.	१०	७	ह.	१५	१	ग.	१७	८	व.	६	४				६ १०	६ ५
१६	मं.	६	६	१६	अनु.	१२	३३	व.	१५	२८	वि.	१९	५	व.	सम्पूर्ण					६ ९	६ ५
१७	बु.	७	८	२१	ज्ये.	१५	९	सि.	१६	३	व.	८	५	वा.	२१	८	ध.	१५	९	६ ८	६ ५
१८	गु.	८	१०	२८	मू.	१७	४५	व्य.	१६	३८	कौ.	१०	११	तै.	२४	१२				६ ७	६ ६
१९	शु.	९	१२	२६	पू.	२०	१०	व	१७	४	ग.	१२	१२	व.	१	९	म.	२	४२	६ ६	६ ६
२०	श.	१०	१४	७	उ.	२२	१८	प.	१७	१६	वि.	१४	५	व.	२	४६				६ ५	६ ७
२१	र.	११	१५	२४	श्र.	२३	५९	शि.	१७	१०	वा.	१५	२७	कौ.	३	५०				६ ४	६ ७
२२	सो.	१२	१६	१५	ध.	१	१४	सि.	१६	४३	तै.	१६	१३	ग.	४	२८	कुं.	१२	३६	६ ३	६ ८
२३	मं.	१३	१६	३४	श.	१	५८	सा.	१५	५०	व.	१९	४२	वि.	४	३८				६ २	६ ८
२४	बु.	१४	१९	२०	पू.	२	१३	शु.	१४	३४	श.	१९	३४	च.	३	५१	मी.	२०	९	६ १	६ ९
२५	गु.	३०	१५	३८	उ.	१	५८	शु.	१२	५४	ना.	१५	५६	वि.	३	२४				६ ०	६ ९

❁ तिथि-पर्व-निर्णय-समिति ❁

संयोजक—

डॉ० रामरंग शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० डिग्री कालेज

पं० श्री रामनाथ शारद, वेदमूर्ति "याज्ञिक शिरोमणि"

" " रामलाल शास्त्री, साहित्य शिरोमणि

सभापति—

" " बाल कृष्ण कपूरिया, कर्मकाण्डी, राज-पुरोहित

प्रधान मंत्री—

" " डॉ० शिवनारायण मिश्र, एच० एम० बी०, बी० बी० एम० (पजीकृत होमियोपैथ)

" " अमर नाथ जैतली, याज्ञिक, कुण्डमण्डप केशरी

" " रेशम लाल मिश्र, पुरोहित

" " प्रेमनाथ शर्मा डोंगरा, बी० ए०

पँचांग एवं सारिणी देखने की विधि

तिथ्यादि सारिणी सं० २०३८, सन् १९८१-८२ ई०

सारिणी देखने की सुविधा हेतु प्रथम पंक्ति में अंग्रेजी तारीख हिन्दी अंकों में दी गई है, बाद की पंक्ति में वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्र-राशि एवं सूर्य उदय-अस्त की पंक्तियों में समय क्रमशः घण्टा-मिनट में दिये गये हैं, करण भी घण्टा- मिनट में है। ता० से तारीख, वा० से वार, ति० से तिथि, न० से नक्षत्र, यो० से योग, क० से करण, चं०रा० से चन्द्र-राशि, सू० उ० से सूर्योदय, सू० अ० से सूर्यास्त, घं० से घण्टा, मि० से मिनट समझना चाहिए। तिथि, नक्षत्र एवं करण का अंकित समय समाप्ति का है तथा चन्द्र-राशि का समय प्रारम्भ का है।

इस सारिणी में घण्टा-मिनट रेलवे घड़ी की संख्यानुसार हैं जैसे—दिन के बारह बजे तक की संख्या ज्यों-की-त्यों है। १२ वजे दिन के बाद १ बजे के स्थान पर १३, २ बजे के स्थान पर १४, १२ बजे रात्रि की जगह पर (शून्य) है। इसके बाद रात्रि के १ बजे से घ० १, २, ३, इसी प्रकार क्रमशः हैं। साधारण जनता की सुविधा के लिए सूर्य-उदय एवं सूर्य-अस्त का समय सीधा ही दिया गया है। रेलवे घड़ी की संख्यानुसार नहीं दिया गया है। सूर्योदय से पूर्व १ मिनट का भी कम समय हो, तो उसे पहले दिन का समय ही समझना चाहिए। दूसरे दिन सूर्योदय मे ही वार एवं तिथि बदली गई है। जो तिथि या नक्षत्र सूर्योदय में नहीं हैं, $\frac{0}{४}$ $\frac{४}{१}$ के रूप में हैं। बटे में नीचे जो अंक हैं, वह आगे की तिथि और नक्षत्र का समझना चाहिये।

दिक्शूल

सोम शनी पूरब नहिं चालू; मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।
बीफै को नहीं दक्खिन जाये, रवि शुक्र पश्चिम ना धाये॥
बुद्ध कहे मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन मत करो पयाना।
कौड़ी से नहीं भेंट कराऊँ, क्षेम कुशल से घर पहुँचाऊँ॥

॥ चन्द्रवास ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धन	मकर	कुम्भ	मीन

॥ चन्द्रवास फल ॥

यात्रा में सन्मुख चन्द्रमा हों, तो अर्थ [धन] की प्राप्ति कराते हैं। दक्षिण [दाहिने] चन्द्रमा हों, तो सुख एवं सम्पदा की प्राप्ति कराते हैं। पृष्ठ में [पीठ पीछे] चन्द्रमा हों, तो मरणतुल्य कष्ट होता है। वाम [बायें] चन्द्रमा हों, तो धन की हानि कराते हैं।

॥ विशेष ॥

मृगशिरा, पुष्य, हस्त और अनुराधा—इन नक्षत्रों में दिक्शूल के दिन को छोड़कर अन्य दिन सब दिशाओं की यात्रा शुभ है।

॥ श्री हरिः ॥



बिना सभा की अनुमति के तिथि-पर्व निर्णय पत्रिका की प्रतिलिपि न करें।

तिथि पर्व-निर्णय संवत् २०३८ शाके १९०३

ईस्वीय सन् १९८१-८२

॥ वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात् ॥

[श्री सूर्य उत्तरायण]   (चैत्र शुक्ल पक्ष, ता० ५ अप्रैल से १९ अप्रैल तक)   (बसंत ऋतु)

[राष्ट्रीय ता० १५ चैत्र से २९ चैत्र तक]

प्रतिपदा	रविवार	५ अप्रैल	भाव नाम संवत्सर, नववर्षारंभ, वसंत नवरात्र प्रारंभ, कलश स्थापन प्रातः ७-५१ तक, तथा ११-३४ से १२-२४ तक अभिजिन्मुहूर्त में पञ्चागदान एवं वार्षिक फल सुनना, तथा पंचक समाप्ति दिन में ४-१६ पर।
द्वितीया	सोमवार	६ अप्रैल	चन्द्र दर्शन।
तृतीया	मंगलवार	७ अप्रैल	गण गौर तीज, गौरी पूजन।
सप्तमी	शनिवार	११ अप्रैल	नवरात्र की सप्तमी का व्रत, तथा अन्नपूर्णा जी की परिक्रमा प्रातः १०-१४ के बाद।
अष्टमी	रविवार	१२ अप्रैल	अष्टमी पूजन जोत जगाना अष्टमी वालों के लिए, तथा अन्नपूर्णा जी की परिक्रमा प्रातः ७-५२ तक, एवं श्री राम नवमी व्रत।
नवमी	सोमवार	१३ अप्रैल	नवमी पूजन जोत जगाना नवमी वालों के लिए तथा देवी विसर्जन अष्टमी वालों के लिए एवं अश्विनी के सूर्य, तथा मेष की संक्रान्ति (सतुआ संक्रांति) रात्रि में ८-२५ पर, एवं संक्रांति का पुण्य काल सायं ४-२५ से सायं ६-१८ तक, हरिद्वार एवं काशी में अस्सी संगम पर स्नान दान का विशेष फल, तथा दादी समाद का पूड़ा।
दशमी	मंगलवार	१४ अप्रैल	देवी विसर्जन नवमी वालों के लिए, तथा नवरात्र समाप्तिः।
एकादशी	बुधवार	१५ अप्रैल	श्री कामदा एकादशी व्रत सबके लिए।
द्वादशी	गुरुवार	१६ अप्रैल	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	शनिवार	१८ अप्रैल	श्री हाटकेश्वर जयंती, एवं पूर्णिमा व्रत की प्रातः १०-१९ के बाद।
पूर्णिमा	रविवार	१९ अप्रैल	पूर्णिमा स्नानदान की दिन में १२-७ तक, तथा वैशाख स्नानदान नियमादि प्रारंभ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (वैशाख कृष्ण पक्ष ता० २० अप्रैल से ४ मई तक) [वसंत ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ३० चैत्र से १४ वैशाख तक]

तृतीया	बुधवार	२२ अप्रैल	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ६-३।
सप्तमी	रविवार	२६ अप्रैल	श्रीशीतला अष्टमी का बासी बनाना एवं भानु सप्तमी पर्व, सूर्यग्रहण के समान स्नान दान का विशेष फल।
अष्टमी	सोमवार	२७ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी पूजन दर्शन (बासी खाना) तथा भरणी के सूर्य, दिन में १२-४३ पर।
नवमी	मंगलवार	२८ अप्रैल	पंचक प्रारम्भ दिन में ४-३४ से।
एकादशी	गुरुवार	३० अप्रैल	वरूथिनी एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	शुक्रवार	१ मई	पक्ष प्रदोष व्रत, तथा शुक्रतारा प्रातः ५-४० पर पश्चिम में उदय होगा।
त्रयोदशी	शनिवार	२ मई	पंचक समाप्ति रात्रि १२-२१ पर, तथा मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	सोमवार	४ मई	सोमवती अमावस, कपिल धारा तीर्थ (काशी में) एवं चन्द्रकूप (सिद्धेश्वरी मोहाल) पर पिण्डदान, स्नानदानादि कार्य, गया श्राद्ध के समान फलप्राप्ति।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (वैशाख शुक्ल पक्ष ता० ५ मई से १८ मई तक) [वसन्त ऋतु ता० १४ मई]

[राष्ट्रीय ता० १५ वैशाख से २८ वैशाख तक] [सायं से ग्रीष्म ऋतु]

प्रतिपदा	मंगलवार	५ मई	चन्द्र दर्शन।
तृतीया	बुधवार	६ मई	अक्षय तृतीया (सतू घटादि दान)।
सप्तमी	रविवार	१० मई	श्री गंगा सप्तमी तथा भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नान दान का विशेष फल।
अष्टमी	सोमवार	११ मई	कृत्तिका के सूर्य प्रातः ७-३४ पर।
एकादशी	गुरुवार	१४ मई	मोहिनी एकादशी व्रत सबके लिये तथा वृष की संक्राति सायं ६-४३ पर।
त्रयोदशी	शनिवार	१६ मई	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्रसुख की कामना वालों के व्रत का प्रारम्भ।
चतुर्दशी	रविवार	१७ मई	श्री नृसिंह चतुर्दशीव्रत नृसिंहजयन्ती।
पूर्णिमा	सोमवार	१८ मई	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान दान की प्रातः से, तथा वैशाख स्नान दान नियमादि समाप्ति।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ता० १९ मई से २ जून तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २९ वैशाख से १२ ज्येष्ठ तक]

तृतीया	शुक्रवार	२२ मई	श्री संकष्टी गणेशचतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ६-३४ पर।
पंचमी	रविवार	२४ मई	रोहिणी के सूर्य प्रातः ५ बजे।

षष्ठी	सोमवार	२५ मई	पञ्चक प्रारम्भ रात्रि १२-१७ से।
सप्तमी	मंगलवार	२६ मई	श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना।
अष्टमी	बुधवार	२७ मई	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना) तथा बुधाष्टमी पर्व, मूंग का दान स्नान तथा मूंग के भोजन का विशेप फल।
एकादशी	शुक्रवार	२९ मई	अपरा एकादशी व्रत स्मार्तों के लिये तथा भद्र काली एकादशी भद्रकाली का महोत्छा।
द्वादशी	शनिवार	३० मई	अपरा एकादशी व्रत वैष्णवों के लिये।
त्रयोदशी	रविवार	३१ मई	पक्ष प्रदोष व्रत तथा मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	मंगलवार	२ जून	वट सावित्री व्रत पूजन तथा (पकौड़ों की अमावस)

[श्री सूर्य उत्तरायण] (ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ता० ३ जून से १७ जून तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १३ ज्येष्ठ से २७ ज्येष्ठ तक]

प्रतिपदा	बुधवार	३ जून	श्री चन्द्र दर्शन।
पंचमी	रविवार	७ जून	मृगशिरा के सूर्य रात्रि ४-२८ पर।
अष्टमी	बुधवार	१० जून	बुधाष्टमीपर्व मूंग का भोजन तथा मूंग के दान एव स्नान का विशेष फल।
दशमी	शुक्रवार	१२ जून	श्री गंगा दशहरा।
एकादशी	शनिवार	१३ जून	निर्जला एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	रविवार	१४ जून	पक्ष प्रदोष व्रत तथा मिथुन की संक्रांति रात्रि ४-४७ पर।
पूर्णिमा	बुधवार	१७ जून	पूर्णिमा व्रत एवं स्नानदान की प्रातः से।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (आषाढ़ कृष्णपक्ष ता० १८ जून से १ जुलाई तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २८ ज्येष्ठ से १० आषाढ़ तक]

चतुर्थी	रविवार	२१ जून	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ९-५४।
पंचमी	सोमवार	२२ जून	पंचक प्रारंभ प्रातः ८-२४ से तथा आर्द्रा के सूर्य प्रातः ५-२४ पर।
सप्तमी	बुधवार	२४ जून	श्री शीतला अष्टमी का (बासी बनाना)।
अष्टमी	गुरुवार	२५ जून	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना)।
नवमी	शुक्रवार	२६ जून	पंचक समाप्ति दिन में ४-५२।
एकादशी	रविवार	२८ जून	योगिनी एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	सोमवार	२९ जून	सोमपक्ष प्रदोष व्रत धन एवं पुत्रसुख की कामना करने वालों के लिए व्रत का आरंभ।
चतुर्दशी	मंगलवार	३० जून	श्री मास शिवरात्रि व्रत।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (आषाढ़ शुक्लपक्ष ता० २ जुलाई से १७ जुलाई तक) [ग्रीष्म ऋतु ता० १६]
[राष्ट्रीय ता० ११ आषाढ़ से २६ आषाढ़ तक] [से वर्षा ऋतु]

द्वितीया	शुक्रवार	३ जुलाई	श्री चन्द्रदर्शन तथा रथयात्रा।
पंचमी	सोमवार	६ जुलाई	पुनर्वसु के सूर्य प्रातः ७-६ पर।
एकादशी	रविवार	१२ जुलाई	विष्णुशयनी एकादशी व्रत स्मार्तों के लिये तथा चातुर्मास व्रत स्नान दान नियम प्रारम्भ।
द्वादशी	सोमवार	१३ जुलाई	विष्णुशयनी एकादशी व्रत वैष्णवों के लिये।
द्वादशी	मंगलवार	१४ जुलाई	भौम पक्ष प्रदोष व्रत ऋण दोष निवारण के लिये व्रत का आरंभ।
चतुर्दशी	गुरुवार	१६ जुलाई	कर्क की संक्रांति रात्रि ८-१६ पर तथा सूर्य दक्षिणायन एवं वर्षाऋतु प्रारम्भ तथा दैत्यों का दिन एवं देवताओं की रात्रि, पूर्णिमा व्रत की प्रातः ८-४८ से।
पूर्णिमा	शुक्रवार	१७ जुलाई	पूर्णिमा स्नानदान की प्रातः ९-४० तक तथा गुरु पूर्णिमा, गुरु एवं व्यास पूजन।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (श्रावण कृष्णपक्ष ता० १८ जुलाई से ३१ जुलाई तक) [वर्षा ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० २७ आषाढ़ से ९ श्रावण तक]

द्वितीया	रविवार	१९ जुलाई	पञ्चक प्रारम्भ दिन में ४-२१ से।
तृतीया	सोमवार	२० जुलाई	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-१९ तथा श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिव जी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना एवं पुष्य के सूर्य प्रातः ८-३४ पर।
सप्तमी	गुरुवार	२३ जुलाई	पंचक समाप्ति रात्रि १-१० पर।
दशमी	रविवार	२६ जुलाई	श्री बाबालालू जसराय जी का महोछा।
एकादशी	सोमवार	२७ जुलाई	कामदा एकादशी व्रत सबके लिये तथा श्रावण सोमप्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
द्वादशी	मंगलवार	२८ जुलाई	भौम पक्ष प्रदोष व्रत ऋणदोष निवारण के लिये व्रत का आरम्भ।
त्रयोदशी	बुधवार	२९ जुलाई	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	शुक्रवार	३१ जुलाई	सूर्यग्रहणः स्पर्श प्रातः ६-५२ : मोक्ष ८-२१ विशेष फलादि पत्रिका के भीतर देखें।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (श्रावण शुक्लपक्ष ता० १ अगस्त से १५ अगस्त तक) [वर्षा ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० १० श्रावण से २४ श्रावण तक]

प्रतिपदा	शनिवार	१ अगस्त	श्री चन्द्र दर्शन।

तृतीया	सोमवार	३ अगस्त	ठकुरानी तीज तथा आश्लेषा के सूर्य दिन में ८-५६ पर एवं श्रावण सोमप्रदोष व्रत सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
पंचमी	बुधवार	५ अगस्त	श्री नागपञ्चमी (नागपचैंयां)।
सप्तमी	शुक्रवार	७ अगस्त	महात्मा गोस्वामी तुलसीदास की जयन्ती।
अष्टमी	शनिवार	८ अगस्त	श्री विंध्याचल माता की अष्टमी जोत जगाना एवं पूजन करना।
दशमी	सोमवार	१० अगस्त	श्रावण सोमप्रदोष व्रत सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
एकादशी	मंगलवार	११ अगस्त	पुत्रदा एकादशी व्रत सबके लिये तथा विष्णुजी पर पवित्रा चढ़ाना।
त्रयोदशी	गुरुवार	१३ अगस्त	पक्ष प्रदोष व्रत तथा श्री मूलो माताजी का महोछा।
चतुर्दशी	शुक्रवार	१४ अगस्त	श्री चन्द्रिकाजी का महोछा।
पूर्णिमा	शनिवार	१५ अगस्त	पूर्णिमा व्रत की एवं स्नानदान की तथा श्रवण नक्षत्र में ऋग्वेदियों की श्रावणी, तथा यजुर्वेदियों की श्रावणी, (उपाकर्म) एवं रक्षाबन्धन (रखड़ी) प्रातः ६-४६ के बाद, तथा पंचक प्रारम्भ रात्रि १२-१० से।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (भाद्रपद कृष्णपक्ष ता० १६ अगस्त से २६ अगस्त तक) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २५ श्रावण से, भाद्रपद तक]

द्वितीया	सोमवार	१७ अगस्त	मघा के सूर्य एवं सिंह की सक्रांति प्रातः ७-४३ पर, तथा मघासिंघा प्रारम्भ प्रातः ७-४३ से।
तृतीया	मंगलवार	१८ अगस्त	अंगार की बहुला संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८-३८ पर, तथा कज्जली तीज (कजरी तीज)
पंचमी	गुरुवार	२० अगस्त	भाई भिन्ना एवं पञ्चक समाप्ति प्रातः १-२०।
षष्ठी	शुक्रवार	२१ अगस्त	ठंडरी का (बासी बनाना) तथा ललही छठ (हल षष्ठी)
सप्तमी	शनिवार	२२ अगस्त	ठंडरी पूजन (बासी खाना) तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्तों के लिये।
अष्टमी	रविवार	२३ अगस्त	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों के लिये तथा जंडी पूजन जेतली सारस्वत एवं मेहरे खत्रियों में प्रचलित।
दसमी	सोमवार	२४ अगस्त	दधिकांदो।
एकादशी	मगलवार	२५ अगस्त	जया एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	बुधवार	२६ अगस्त	गांवच्छा, (गाय बछड़े का पूजन)।
त्रयोदशी	गुरुवार	२७ अगस्त	पक्ष प्रदोष व्रत तथा मास शिवरात्रि व्रत।

अमावस	शनिवार	२९ अगस्त	कुशोत्पाटिनी अमावस (कुशा लाना) ॐ हूं फट् इस मन्त्र से, कुशा ग्रहण करना ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (भाद्रपद शुक्ल पक्ष ता० ३० अगस्त से १४ सितम्बर तक) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ८ भाद्रपद से २३ भाद्रपद तक]

प्रतिपदा	रविवार	३० अगस्त	पूर्वा फाल्गुनी के सूर्य, रात्रि ४-८ पर ।
द्वितीया	सोमवार	३१ अगस्त	श्रीचन्द्र दर्शन तथा तीज की सर्घी ।
तृतीया	मंगलवार	१ सितम्बर	हरतालिका तृतीया (वड़ी तीज) तथा हस्त नक्षत्र में प्रातः से सामवेदियों की श्रावणी तथा शिवा जी का महोछा ।
चतुर्थी	बुधवार	२ सितम्बर	ढेला चौथ, चन्द्र दर्शन निषेध, चन्द्रास्त रात्रि ८-५० ।
पंचमी	गुरुवार	३ सितम्बर	ऋषि पंचमी व्रत (ऋषि पूजन) ।
षष्ठी	शुक्रवार	४ सितम्बर	लोलारक छठ, काशी मे लोलारक कुण्ड में स्नान एवं सूर्य पूजन, दर्शन ।
सप्तमी	शनिवार	५ सितम्बर	श्री महालक्ष्मी व्रत का आरम्भ, धागा बाँधना सप्तमी वालों के लिये ।
अष्टमी	रविवार	६ सितम्बर	श्री महालक्ष्मी व्रत का आरम्भ, धागा बाँधना अष्टमी वालों के लिये ।
एकादशी	गुरुवार	१० सितम्बर	पद्मा एकादशी व्रत सबके लिये ।
द्वादशी	शुक्रवार	११ सितम्बर	बामन द्वादशी एवं पक्ष प्रदोष व्रत ।
त्रयोदशी	शनिवार	१२ सितम्बर	पंञ्चक प्रारम्भ प्रातः ७-४४ से ।
चतुर्दशी	रविवार	१३ सितम्बर	श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत एवं पूर्णिमा व्रत की प्रातः ६-२९ के बाद तथा पूर्णिमा का श्राद्ध, महालयारम्भ, एवं उत्तरा फाल्गुनी के सूर्य रात्रि ६-५९ पर ।
पूर्णिमा	सोमवार	१४ सितम्बर	पूर्णिमा स्नानदान की प्रातः ८-२७ तक तथा प्रतिपदा का श्राद्ध एवम् अथर्ववेदियों की श्रावणी (उपाकर्म) ।

[सूर्य दक्षिणायन] (आश्विन कृष्णपक्ष ता० १५ सितम्बर से २८ सितम्बर तक) [वर्षाऋतु ता० १७]

[राष्ट्रीय ता० २४ भाद्रपद से ६ आश्विन तक] [सि शरद ऋतु]

प्रदिपदा	मंगलवार	१५ सितम्बर	द्वितीया का श्राद्ध ।
तृतीया	बुधवार	१६ सितम्बर	पंञ्चक समाप्ति सायं ५-१७ पर तथा तृतीया का श्राद्ध ।
चतुर्थी	गुरुवार	१७ सितम्बर	श्री संकष्ठी गणेश चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय ८-३८ तथा चतुर्थी का श्राद्ध एवं कन्या की संक्राति प्रातः ८-२ से तथा विश्वकर्मा पूजा ।
पंचमी	शुक्रवार	१८ सितम्बर	पंचमी श्राद्ध तथा भरणी श्राद्ध ।
षष्ठी	शनिवार	१९ सितम्बर	षष्ठी (छठ) का श्राद्ध ।
सप्तमी	रविवार	२० सितम्बर	सप्तमी का श्राद्ध एवं भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नानदान का विशेषफल तथा श्री महालक्ष्मी का धागा खोलना सप्तमी वालों के लिये ।

अष्टमी	सोमवार	२१ सितम्बर	अष्टमी का श्राद्ध तथा महालक्ष्मी का धागा खोलना अष्टमी वालों के लिये एवं जीवत्पुत्रिका (जूतिया) का व्रत, जूतिया का मेला श्री काशी जी में लक्ष्मीकुण्ड पर।
नवमी	मंगलवार	२२ सितम्बर	नवमी का श्राद्ध, मातृनवमी, सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध। तथा जूतिया व्रत की पारणा एवं श्री महालक्ष्मी दर्शन पूजन।
दशमी	बुधवार	२३ सितम्बर	दशमी का श्राद्ध ११-२५ तक तथा बाद में एकादशी का श्राद्ध।
एकादशी	गुरुवार	२४ सितम्बर	द्वादशी का श्राद्ध, तथा इन्दिरा एकादशी व्रत सबके लिये तथा सन्यासी, यति, ब्रह्मचारी एवं वैष्णवों के श्राद्ध का दिन।
द्वादशी	शुक्रवार	२५ सितम्बर	त्रयोदशी का श्राद्ध तथा मघा श्राद्ध, एवं पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	शनिवार	२६ सितम्बर	चतुर्दशी का श्राद्ध एवं अस्त्र शस्त्र आघात से मरे लोगों का श्राद्ध तथा श्री मास शिवरात्रि व्रत।
चतुर्दशी	रविवार	२७ सितम्बर	अमावस का श्राद्ध एवं जिनकी मृततिथि न मालूम हो उनके श्राद्ध का दिन तथा पितृविसर्जन महालय समाप्ति, एवं हस्त के सूर्य दिन में १-६ पर।
अमावस	सोमवार	२८ सितम्बर	सोमवती अमावस, कपिल धारा तीर्थ (काशी में) तथा चन्द्रकूप (सिद्धेश्वरी मोहाल) में पिण्डदान, श्राद्ध स्नान दानादि का विशेष फल, नानापड़वा, मातामह के श्राद्ध का दिन।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (आश्विन शुक्लपक्ष ता० २६ सितम्बर से १३ अक्तूबर तक) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ७ आश्विन से २१ आश्विन तक]

प्रतिपदा	मंगलवार	२९ सितम्बर	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, कलशस्थापन प्रातः से ८-१८ तक तथा (अभिजिन्मुहूर्त ११-२२ से १२-१० तक) तथा गुरुतारा रात्रि में १२ बजे पश्चिम में अस्त होगा एवं चन्द्र दर्शन।
सप्तमी	सोमवार	५ अक्तूबर	नवरात्र की सप्तमी का व्रत तथा अन्नपूर्णा जी की परिक्रमा रात्रि ८-११ से।
अष्टमी	मंगलवार	६ अक्तूबर	अष्टमी पूजन जोत जगाना अष्टमी वालों के लिये तथा अन्नपूर्णा जी की परिक्रमा रात्रि ६-३७ तक।
नवमी	बुधवार	७ अक्तूबर	नवमी पूजन जोत जगाना नवमी वालों के लिये तथा देवी विसर्जन अष्टमी वालों के लिए।
दशमी	गुरुवार	८ अक्तूबर	विजया दशमी (दशहरा) देवी विसर्जन नवमी वालों के लिए।
एकादशी	शुक्रवार	९ अक्तूबर	पापांकुशा एकादशी व्रत सबके लिये तथा पंचक प्रारम्भ दिन में ३-१६ से।

द्वादशी	शनिवार	१० अक्तूबर	चित्रा के सूर्य रात्रि में १-३० से।
त्रयोदशी	रविवार	११ अक्तूबर	पक्षप्रदोष व्रत।
पूर्णिमा	मंगलवार	१३ अक्तूबर	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान दान की प्रातः से (शरद पूर्णिमा) एवं कार्तिक स्नान दान व्रतादि नियम प्रारम्भ तथा पंचक समाप्ति रात्रि १-१५ पर।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (कार्तिक कृष्णपक्ष ता० १४ अक्तूबर से २७ अक्तूबर तक) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २२ आश्विन से ५ कार्तिक तक]

द्वितीया	गुरुवार	१५ अक्तूबर	करवाचौथ की सर्घी।
तृतीया	शुक्रवार	१६ अक्तूबर	करवा चौथ (करक चतुर्थी) श्री संकष्टी गणेशचतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८-६ पर।
चतुर्थी	शनिवार	१७ अक्तूबर	तुला की संक्रान्ति सायं ६-३६ पर।
अष्टमी	मंगलवार	२० अक्तूबर	श्री अहोई अष्टमी व्रत (श्री होई माता का पूजन)।
नवमी	बुधवार	२१ अक्तूबर	तुला राशि के गुरु रात्रि के अंत में ५-० पर।
एकादशी	शुक्रवार	२३ अक्तूबर	रम्भा एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	शनिवार	२४ अक्तूबर	स्वाती के सूर्य दिन में ११-६ पर।
त्रयोदशी	रविवार	२५ अक्तूबर	पक्ष प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, (धनतेरस) धन्वन्तरी जयंती एवं पूजन तथा रात्रिके अंतमें हनुमज्जन्म एवं मास शिवरात्रि व्रत तथा गुरु तारा प्रातः ८-२० पर पूर्व में उदय होगा।
चतुर्दशी	सोमवार	२६ अक्तूबर	नरक चतुर्दशी हनुमानजी का पूजन दर्शन।
अमावस	मंगलवार	२७ अक्तूबर	दीपावली (दिवाली) सायंकाल में लक्ष्मी कुवेरादि पूजन।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (कार्तिक शुक्लपक्ष ता० २८ अक्तूबर से ११ नवम्बर तक) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ६ कार्तिक से २० कार्तिक तक]

प्रतिपदा	बुधवार	२८ अक्तूबर	अन्नकूट, गोबरधन पूजा।
द्वितीया	गुरुवार	२९ अक्तूबर	भाईदूज (भैयादूज) यमद्वितीया, यमुना स्नान तथा श्री चन्द्र दर्शन।
षष्ठी	मंगलवार	३ नवम्बर	डाले की पहिली पूजा सायंकाल में (निर्णय पत्रिका में देखें)
सप्तमी	बुधवार	४ नवम्बर	डाले की दूसरी पूजा प्रातः तथा सूर्य षष्ठी व्रत की पारणा।
अष्टमी	गुरुवार	५ नवम्बर	गोपाष्टमी (गो पूजन) तथा पंचक प्रारम्भ रात्रि १०-४८ से।
नवमी	शुक्रवार	६ नवम्बर	अक्षयनवमी, कूष्माण्ड (पेठादि) दान तथा आँवले के वृक्ष की पूजन परिक्रमा एवं आँवले के वृक्ष के नीचे भोजन एवं विशाखा के सूर्य सायं ६-२० पर।

एकादशी	रविवार	८ नवम्बर	प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबके लिये, (देवोत्थान एकादशी) तथा तुलसी विवाह दिन में ११-४६ के बाद तथा चातुर्मास व्रत स्नान दान, नियमादि समाप्ति, भीष्म पंचक प्रारम्भ ।
द्वादशी	सोमवार	९ नवम्बर	सोम प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र की कामनावालों के लिये व्रत का आरंभ ।
त्रयोदशी	मंगलवार	१० नवम्बर	श्री गंगाजी को तुलसी चढ़ाना तथा बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत एवं पंचक समाप्ति प्रातः ९-१६ पर ।
चतुर्दशी	बुधवार	११ नवम्बर	बैकुण्ठ चतुर्दशी का स्नान एवं दान प्रातः ६-४३ तक तथा पूर्णिमा व्रत एवं स्नान दान की प्रातः ६-४३ से तथा कार्तिकी पूर्णिमा, कार्तिक स्नान दान नियमादि समाप्ति एवं भीष्मपंचक व्रत समाप्ति तथा विश्वनाथ जी की तिपर बत्ती से आरती एवं पूजन करना एवं काशी में गोविन्द माधव का वार्षिकोत्सव ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष ता० १२ नवम्बर से २६ नवम्बर तक) [राष्ट्रीय ता० २१ कार्तिक से ५ मार्गशीर्ष तक] { शरद ऋतु ता० १६ से हेमन्त ऋतु }

प्रतिपदा	गुरुवार	१२ नवम्बर	कार्तिक व्रत की पारणा ।
तृतीया	शनिवार	१४ नवम्बर	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चंद्रोदय रात्रि ७-४२ ।
पंचमी	सोमवार	१६ नवम्बर	वृश्चिक की संक्रांति दिन में ४-१६ पर तथा हेमन्त ऋतु प्रारंभ ४-१६ से एवं कार्तिक पूजा दिन में ४-१६ से ।
सप्तमी	बुधवार	१८ नवम्बर	श्री महा भैरवाष्टमी व्रत, भैरवनाथजी का दर्शन पूजन ।
अष्टमी	गुरुवार	१९ नवम्बर	अनुराधा के सूर्य, रात्रि ११-१७ पर ।
एकादशी	रविवार	२२ नवम्बर	उत्पन्ना एकादशी व्रत, सबके लिए ।
द्वादशी	सोमवार	२३ नवम्बर	सोम पक्षप्रदोष व्रत, पुत्र की कामनावालों के लिये व्रत का आरंभ ।
त्रयोदशी	मंगलवार	२४ नवम्बर	श्री मास शिवरात्रि व्रत ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ता० २७ नवम्बर से ११ दिसम्बर तक) [हेमन्त ऋतु] [राष्ट्रीय ता० ६ मार्गशीर्ष से १० मार्गशीर्ष तक]

द्वितीया	शनिवार	२८ नवम्बर	श्री चन्द्र दर्शन ।
षष्ठी	बुधवार	२ दिसम्बर	पंचक प्रारम्भ प्रातः ६-२४ से तथा ज्येष्ठा के सूर्य रात्रि २-२० पर ।
एकादशी	सोमवार	७ दिसम्बर	मोक्षदा एकादशीव्रत सब के लिए तथा पंचक समाप्ति सायं ५-२१ ।
त्रयोदशी	बुधवार	९ दिसम्बर	पक्ष प्रदोषव्रत ।
चतुर्दशी	गुरुवार	१० दिसम्बर	पिशाच मोचन यात्रा, लोटा-भंटा का मेला काशी में पिशाच मोचन तीर्थ

पर तथा पूर्णिमा व्रत की सायं ५-१३ से एवं दत्तात्रेय जयन्ती।

पूर्णिमा शुक्रवार ११ दिसम्बर पूर्णिमा स्नानदान की दिन में २-५२ तक।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (पौष कृष्णपक्ष ता० १२ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक) [हेमन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २१ मार्गशीर्ष से ५ पौष तक]

तृतीया	सोमवार	१४ दिसम्बर	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चंद्रोदय रात्रि ८-३०।
पंचमी	मंगलवार	१५ दिसम्बर	मूल के सूर्य एवं धनकी संक्रान्ति रात्रि ४-१ पर तथा खरमास प्रारंभ रात्रि ४-१ से।
एकादशी	मंगलवार	२२ दिसम्बर	सफला एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	बुधवार	२३ दिसम्बर	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	गुरुवार	२४ दिसम्बर	श्री मास शिवरात्रि व्रत।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (पौष शुक्लपक्ष ता० २७ दिसम्बर से ९ जनवरी तक) [हेमंत ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ६ पौष से १९ पौष तक]

प्रतिपदा	रविवार	२७ दिसम्बर	श्री चन्द्र दर्शन, श्री बाबा मुकुन्द का (बासी बनाना)।
द्वितीया	सोमवार	२८ दिसम्बर	पूर्वाषाढा के सूर्य रात्रि ४-५० पर तथा श्री बाबा मुकुन्द का पूजन (बासी खाना)
चतुर्थी	बुधवार	३० दिसम्बर	पंचक प्रारम्भ दिन में २-६ से।
षष्ठी	शुक्रवार	१ जनवरी	ईस्वी सन् १९८२ प्रारम्भ।
अष्टमी	रविवार	३ जनवरी	पंचक समाप्ति रात्रि १-३० पर।
एकादशी	बुधवार	६ जनवरी	पुत्रदा एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	गुरुवार	७ जनवरी	पक्ष प्रदोष व्रत।
पूर्णिमा	शनिवार	९ जनवरी	पूर्णिमा व्रत की एवं स्नान दानकी माघ मास स्नान दान नियमादि प्रारंभ, तथा चन्द्र ग्रहण, स्पर्श रात्रि ११-४३ मोक्ष रात्रि ३-७ पर।

[श्री सूर्य दक्षिणायन तथा ता० १४ से उत्तरायण] (माघ कृष्ण पक्ष ता० १० जनवरी से २५ जनवरी तक) [राष्ट्रीय ता० २० पौष से ५ माघ तक] { हेमन्त ऋतु ता० १४ से शिशिर ऋतु

प्रतिपदा	रविवार	१० जनवरी	उत्तराषाढ़ा के सूर्य रात्रि शेष में ५-२५ पर।
तृतीया	मंगलवार	१२ जनवरी	अंगार की संकष्टी गणेश चतुर्थी (बड़ी गणेश चौथ) व्रत चन्द्रोदय रात्रि ७-५४ पर।
चतुर्थी	बुधवार	१३ जनवरी	लोहड़ी पर्व (लोहड़ी पूजन)।
पंचमी	गुरुवार	१४ जनवरी	मकर की संक्रान्ति (खिचड़ी) दिन में ११-३८ पर, पुण्य काल दिन में ११-३८ से सूर्यास्त तक, सूर्य उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दैत्यों की

तार : WASTEPAPER   फोन [गद्दी] ६३१४४
निवास ५३८२३
„ ६३०४९

उर्मिला सिल्क स्टोर

निर्माता एवं विक्रेता

आधुनिक कलापूर्ण बनारसी साड़ियां,
ब्लाउज पीस इत्यादि

वसन्ती कटरा (लक्खी चौतरा)

वाराणसी

सदैव U. S. S. हस्तकरघा निर्मित वस्त्र ही व्यवहार करें।

तार : WASTEPAPER   फोन [गद्दी] ५४०७४
निवास ६४६६३

वेस्टेज सप्लाइंग कं०

वेस्टपेपर मर्चेन्ट, कमीशन एजेन्ट एवं मिल सप्लायर

ब्रांच :—
गोरखपुर

स्थानीय गोदाम	कार्यालय
औसानगंज पैलेस	वसन्ती कटरा
वाराणसी	[लक्खी चौतरा]
	वाराणसी

व्यवस्थापक : **उमाशंकर खन्ना एण्ड ब्रदर्स**

फोन { दुकान ५२११५
निवास ५३८२३ }

ललिता फार्मास्यूटिकल एजेन्सीज

सी० के० १५/१५, बुलानाला, (दवापट्टी)

वाराणसी

अंग्रेजी दवा कम्पनियों के अधिकृत विक्रेता

फोन { निवास ५३८२३
दुकान ५२११५ }

ललिता फार्मास्यूटिकल्स

सी० के० १५/४ बी., बुलानाला
(दवापट्टी)

वाराणसी

अंग्रेजी दवाओं के थोक विक्रेता

			रात्रि, प्रयाग संगम तथा काशी में दशाश्वमेध घाट पर स्नान दान का विशेष फल।
सप्तमी	शनिवार	१६ जनवरी	श्री वावेजी की पहिली चोटी।
दशमी	मंगलवार	१९ जनवरी	शुक्र तारा दिन में ३-५६ पर पश्चिम में अस्त होगा।
एकादशी	बुधवार	२० जनवरी	षट्तिला एकादशी व्रत सबके लिये।
त्रयोदशी	शुक्रवार	२२ जनवरी	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	शनिवार	२३ जनवरी	श्री वावेजी की दूसरी चोटी तथा मास शिवरात्रि व्रत एवं चौकसियों की पूजा मेहरे खत्रियों में प्रचलित एवं श्रवण के सूर्य, रात्रि शेष में ६-३३ पर।
चतुर्दशी	रविवार	२४ जनवरी	शुक्र तारा प्रातः ८-६ पर पूर्व में उदय होगा।
अमावस	सोमवार	२५ जनवरी	सोमवती अमावस, काशी में कपिल धारा तीर्थ एवं सिद्धेश्वरी मोहाल में चन्द्रकूप पर स्नानदान पिण्डदान का विशेष फल। मौनी अमावस, प्रयाग अथवा दशाश्वमेध घाट पर मौनावस्था में स्नान का विशेष तथा फल।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (माघ शुक्ल पक्ष ता० २६ जनवरी से ८ फरवरी तक) [शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ६ माघ से १९ माघ तक]

प्रतिपदा	मंगलवार	२६ जनवरी	श्री चन्द्र दर्शन तथा पंचक प्रारंभ रात्रि ९-४५ से।
पंचमी	शनिवार	३० जनवरी	श्री वावेजी की तीसरी चोटी तथा बसंत पंचमी, (श्री पंचमी) तथा गोविन्द माधव प्रभु उत्सव।
षष्ठी	रविवार	३१ जनवरी	पंचक समाप्ति दिन में ९-३४ पर तथा अचला सप्तमी (रथ सप्तमी) एवं वावेजी की वसंत की कढ़ाई करना, पूजन करना।
एकादशी	गुरुवार	४ फरवरी	जया एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	शुक्रवार	५ फरवरी	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	शनिवार	६ फरवरी	घनिष्ठा के सूर्य प्रातः ८-४३ पर तथा श्री वावेजी की चौथी चोटी।
चतुर्दशी	रविवार	७ फरवरी	पूर्णिमा व्रत, दिन में २-५८ से।
पूर्णिमा	सोमवार	८ फरवरी	पूर्णिमा स्नान दान दिन में १-१८ तक तथा माघ स्नान, दान नियमादि समाप्ति।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (फाल्गुन कृष्ण पक्ष ता० ९ फरवरी से १३ फरवरी तक) [शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २० माघ से ४ फाल्गुन तक]

तृतीया	गुरुवार	११ फरवरी	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ८-२५।
चतुर्थी	शुक्रवार	१२ फरवरी	कुंभ की संक्रांति रात्रि १०-२० पर।

एकादशी	शुक्रवार	१९ फरवरी	विजया एकादशी व्रत सबके लिये तथा शतभिषा के सूर्य दिन में १२-२७ पर।
त्रयोदशी	रविवार	२१ फरवरी	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	सोमवार	२२ फरवरी	श्री महाशिवरात्रि व्रत, (वैद्यनाथ जयंती) तथा पंचक प्रारंभ प्रातः ५-१३ से।
अमावस	मंगलवार	२३ फरवरी	श्री महाशिवरात्रि व्रत की पारणा एवं योगी जिमाना।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (फाल्गुन शुक्लपक्ष ता० २४ फरवरी से ९ मार्च तक) [शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ५ फाल्गुन से १८ फाल्गुन तक]

द्वितीया	गुरुवार	२५ फरवरी	श्री चन्द्र दर्शन।
चतुर्थी	शनिवार	२७ फरवरी	पंचक समाप्ति सायं ५-२९ पर।
अष्टमी	बुधवार	३ मार्च	श्री बुधाष्टमी पर्वमूंग का दान स्नान एवं मूंग के भोजन का विशेष फल।
नवमी	गुरुवार	४ मार्च	पूर्वा भाद्रपदा के सूर्य सायं ६-१९ पर।
दशमी	शुक्रवार	५ मार्च	आमलकी एकादशी व्रत स्मार्तो के लिए।
एकादशी	शनिवार	६ मार्च	आमलकी एकादशी व्रत वैष्णवों के लिए।
त्रयोदशी	रविवार	७ मार्च	पक्ष प्रदोष व्रत तथा साँवा तिले का पूजन (बासी खाना)।
पूर्णिमा	मंगलवार	९ मार्च	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान दान की तथा रात्रि में ८ बजे से १-३४ तक होलिकादाह, होलिका पूजन।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (चैत्र कृष्ण पक्ष ता० १० मार्च से २५ मार्च तक) { शिशिर ऋतु तथा ता० १४ से वसंत ऋतु }

[राष्ट्रीय ता० १९ फाल्गुन से ४ चैत्र तक]

प्रतिपदा	बुधवार	१० मार्च	होलिका विभूतिधारण, काशी में घुरड्डी चतुष्षष्ठी यात्रा चौसट्टी देवी का दर्शन, पूजन।
चतुर्थी	शनिवार	१३ मार्च	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८-२९ पर।
पंचमी	रविवार	१४ मार्च	मीन की संक्रान्ति सायं ६-११।
सप्तमी	बुधवार	१७ मार्च	उत्तरा भाद्रपदा के सूर्य रात्रि २-२६ पर एवं श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना तथा सिलाहो सप्तमी पंजाब में प्रसिद्ध।
अष्टमी	गुरुवार	१८ मार्च	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना)
एकादशी	रविवार	२१ मार्च	पाप मोचनी एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	सोमवार	२२ मार्च	पंचक प्रारम्भ दिन में १२-३६ से तथा सोम पक्ष प्रदोषव्रत, पुत्र की कामना वालों के लिये व्रत का आरंभ, तथा श्री शालिवाहन शाके १९०४ प्रारंभ।
त्रयोदशी	मंगलवार	२३ मार्च	श्री मास शिवरात्रि व्रत तथा वारुणी पर्व सूर्योदय से सायं ४-३४ तक स्नान दान।
अमावस	गुरुवार	२५ मार्च	अमावस स्नानदान की तथा संवत्सर समाप्ति।

विशेष :—पंचक समाप्ति प्रथम नवरात्रको रात्रि में होगी।

ॐ शांतिः ।। शांतिः । शांतिः ।

।। शुभं भूयात् सर्वजगताम् ।।

।। श्री सरस्वत्यै नमः ।।

॥ वर्ष हर्ष : प्रकर्ष स्यात् ॥

।। सम्वत् २०३८ में मेषादि द्वादश राशियों का संक्षिप्त फल ।।

राशिफल देखने का क्रम=१ राशि में ६ अक्षर होते हैं उनमें अपने नाम का जो अक्षर हो वही अपनी नाम राशि जाननी चाहिये। उस राशि का जो फल है वही अपना राशिफल समझना चाहिये। यदि अपनी जन्म पत्री की राशि मालूम हो तो उसी से राशि-फल देखना चाहिये क्योंकि ग्रह गोचर का फल जन्म राशि से ही देखना चाहिये। यह शास्त्र का शुद्ध मत है—यदि जन्म-राशि न मालूम हो तो नाम-राशि से ही विचार एवं फल समझना चाहिये।

मेष —(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ,) वर्ष मध्यम है। वर्ष का आधा पहिला भाग सामान्य तथा दूसरा आधा भाग अच्छा रहेगा, माता को विशेष कष्ट की संभावना। स्त्री पुत्रादि को सामान्य कष्ट, सुख, समृद्धि, मान प्रतिष्ठा, धन, संपत्ति आदि की वृद्धिका योग, गृह-कलह एवं स्वजनों से विरोध से अशांति। चोट चपेट वाहन दुर्घटना की संभावना, राजद्वार से विजय प्राप्ति, शुभ-कार्यों मे विघ्न, वर्ष के ४-६-६-१२ मास नेष्ट हैं शेष शुभ-फल कारक है।

वृष —(ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो,) वर्ष सामान्य है। प्रयास से कठिन एवं रुके पड़े कार्यो में सिद्धि की प्राप्ति, स्त्री को शारीरिक तथा मानसिक अशान्ति, शिक्षा में सफलता की संभावना, पुत्रादिको शारीरिक पीड़ा, धर्म एवं भक्ति-मार्ग में विशेष रुचि, किसी प्रकार के झगडे झंझटों से दूर रहना हितकर है यश-वृद्धि का योग, शासक वर्ग से मान-प्राप्ति, वर्ष के ३-८-१२ मास नेष्ट हैं शेष मास शुभ फल-कारक हैं।

मिथुन–(का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा) वर्ष साधारण है। ग्रह कुछ विपरीत हैं। परिवार में कष्ट, अशांति का वातावरण रहेगा, मित्र पक्ष से विरोध का योग महत्व के कार्यों में विघ्न की प्राप्ति, फिर भी प्रयास करने से सिद्धि का योग, भूमि एवं गृह निर्माण में सफलता, यात्रा में निरर्थक अप-व्यय, परिस्थिति कभी अनुकूल, कभी प्रतिकूल चलेगी। शनि की अढ़ैया चल रही है जो वर्ष भर रहेगी तथा गुरु भी चतुर्थ हैं जो २१ अक्तूबर तक रहेंगे। अतः हनुमानजी का पूजन पाठ तथा केले के वृक्ष की पूजा शांति देगी। वर्ष के २-७-११ मास नेष्ट हैं शेष शुभ हैं।

कर्क —(ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) वर्ष मन्द फल कारक है। वायु के रोग, शारीरिक पीड़ा, चोट चपेट की संभावना है, स्त्री एवं परिवार को रोग एवं अशांति का योग, पुत्रों की उन्नति का योग, परिवार में शुभ कार्य का योग, पराक्रम से सफलता प्राप्ति, गृह भूमि के निर्माण में बाधा प्राप्ति, अधिकारी वर्ग सहायक होगा फिर भी संघर्ष की स्थिति रहेगी, भाई-बन्धु एवं मित्रों से विरोध, यात्रा एवं मुकदमे मे धन का अप-व्यय, वर्ष प्रायः संघर्षमय है, वर्ष के १-३-७, १० मास नेष्ट हैं शेष मास शुभ कारक हैं।

सिंह—(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे,) वर्ष सामान्य है। शारीरिक एवं मानसिक व्यग्रता रहेगी। जीविका प्राप्ति में भी संघर्ष का योग, परिवार में अकारण कलह की संभावना, यात्रा एवं परिवार में धनका अपव्यय, संतान एवं स्त्री सुख का सामान्य सुख, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति, स्वास्थ साधारणतः ठीक रहेगा, विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा, राजद्वार में संघर्ष से सफलता की प्राप्ति, शनि की साढ़े साती चल रही है जो प्रायः वर्ष भर रहेगी। अतः हनुमान चालीसा एवं पीपल की परिक्रमा से शांति मिलेगी। वर्ष के ३,६, ८, १२ मास नेष्ट हैं शेष शुभ हैं।

कन्या—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) वर्ष कष्टप्रद है, शारीरिक एवं मानसिक संतुलन विपरीत चलेंगे, उदर संबंधी रोग त्रास देंगे, कुटम्ब परिवार में कलह का योग, स्त्री पुत्र से अशांति, नौकर चाकर से सुख तथा शांति, आय में रुकावट फिर भी संघर्ष से प्राप्ति का योग, शिक्षा क्षेत्र में सफलता, माता को कष्ट, साहसिक कार्यों में सफलता की प्राप्ति, राजद्वार में पराजय का योग, शनि की साढ़ेसाती चल रही है, अतः पीपल की परिक्रमा, हनुमान चालीसा के पाठ से शांति की प्राप्ति। वर्ष के १,५-७-११ मास नेष्ट, शेष शुभ हैं।

तुला—(रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते) वर्ष सामान्य है। यात्रा तथा राजद्वार में द्रव्य का अपव्यय, आय तथा द्रव्य प्राप्ति का योग, माता एवं स्त्री को बात रोग एवं रक्त विकार से कष्ट, पुत्रादि की उन्नति का योग, विरोधी पक्ष से हानि संभव है, नौकरी में अधिकारी वर्ग से मनमुटाव एवं स्थानांतरण का योग, अग्निकाण्ड की संभावना, निश्चित कार्यों में असफलता का योग, अचानक द्रव्य प्राप्ति का योग, शनि तथा कार्तिक कृष्ण तक गुरु का पूजन सुख दायक रहेगा, वर्ष के ४-६-७-१० मास नेष्ट हैं शेष शुभ हैं।

वृश्चिक—(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) वर्ष मिश्रित फलकारक है, शारीरिक व्याधि से अशांति, स्त्री को रक्त-विकार तथा उदर संबंधी रोग का योग, पराक्रम तथा साहस से द्रव्य का लाभ, तीर्थयात्रा तथा धार्मिक कार्यों में द्रव्य का व्यय, माता-पिता से शांति की प्राप्ति, शिक्षा एवं पठन पाठन में सफलता, भ्रातृवर्ग को पीड़ा का योग, किसी दुर्घटना से आघात का योग, कोई महत्व के कार्य में सफलता, जननेंद्रिय संबंधी रोग का भय। वर्ष के ३-६-९-११ मास नेष्ट हैं शेष मास शुभ हैं।

धन—(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे,) वर्ष उत्तम है। शारीरिक सुख एवं शांति का योग, अधिकारी वर्ग से सहयोग एवं पद मान वृद्धि का योग, स्त्री पक्ष से शांति तथा सुख की प्राप्ति का योग, परिवार में मांगलिक कार्य का योग, मित्रों से सहयोग एवं शांति का योग, व्यापार में नई योजना से लाभ का योग, पठन-पाठन में अरुचि, अग्निकांड से हानि की संभावना, भूमि एवं भवन निर्माण में सफलता, धार्मिक यात्रा से मन में शांति। वर्ष के २-४-८-१० मास नेस्ट हैं शेष शुभ हैं।

मकर—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी,) वर्ष सामान्य है, शारीरिक एवं उदर विकार से मन में अशांति, स्त्री को कष्ट एवं पुत्रादि के स्वास्थ में गड़बड़ी, संघर्ष से सफलता की प्राप्ति का योग, व्यापार में हानिका योग, विद्यार्थी वर्ग को शिक्षा में विघ्न की प्राप्ति, राजद्वार से सफलता की प्राप्ति, परिवार एवं समाज में प्रतिष्ठा की प्राप्ति का योग, अधिकारी वर्ग अनुकूल रहेगा, वाहन से सुख की प्राप्ति, साझेदार के कार्य में हानि का योग, संबंधी को कष्ट की प्राप्ति। वर्ष के १-३-७-१० मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ हैं।

कुंभ—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,) वर्ष साधारण है, व्यापार से लाभ का योग, पराक्रम में वृद्धि का योग, शारीरिक कष्ट, रोगादि से मन खिन्न रहेगा, शल्यचिकित्सा का योग, परिवार में मांगलिक कार्य तथा धार्मिक कार्यों में धन का खर्च, रक्तविकार बातरोग से कष्ट की प्राप्ति, पुत्रादिकी उन्नतिका योग, राजद्वार से विजय प्राप्ति का योग, हृदय पीड़ा एवं रोग की प्राप्ति का योग, शनि की अढ़ैया चल रही है, अतः शनि की पूजा, पीपल की परिक्रमा, हनुमान जी का पाठ शांतिदायक होगा। वर्ष के २-६-८-११ मास नेष्ट हैं, शेष शुभ फलकारक हैं।

मीन—(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची,) वर्ष साधारण है, वृत्ति पराक्रमी रहेगी, आर्थिक स्थिति विषम रहेगी, पठन-पाठन में असफलता का योग, माता-पिता को कष्ट एवं अशांति, स्त्री पक्ष से अशांति एवं कलह का

योग, विदेश भ्रमण का एवं प्रवासी जीवन का योग, परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जननेन्द्रिय संबंधी रोग का भय, व्यापार से लाभ, नौकरी वालों के लिये अधिकारी वर्ग से मनमुटाव, भ्रातृ वर्ग की उन्नति का योग, वाहन से चोट-चपेट का भय। वर्ष के १-५-७-१० मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ फलदायक हैं।

साधारण ग्रह गति का विचार

गुरु वर्ष के आरम्भ से कन्या राशि पर रहेंगे। अतः वृश्चिक, कुंभ, मिथुन राशिवालों को कष्टकारी हैं। अतः उपरोक्त राशिवाले गुरु का दान, शांति, जपादि करें जिससे शांति की प्राप्ति होगी, ततः २१ अक्तूबर को तुला राशि पर जायेंगे अतः धन, मीन, कर्क राशि वालों को कष्टकर। अतः उपरोक्त राशिवाले भी शांति, जप, दानादि से शांति लाभ करेंगे तथा वृहस्पति की शांति के लिये केले के वृक्ष की पूजा, चने की दाल, हल्दी वेसन के लड्डू से पूजित गुरु शांति देंगे। पुखराज की अँगूठी स्वर्ण की धारण करें।

शनि वर्ष के आरंभ से प्रायः कन्या राशि पर वर्ष भर रहेंगे। अतः सिंह, कन्या, तुला, राशिवालों को साढ़े साती एवं धन तथा मेष राशिवालों अढ़ैया रहेगी, अतः उपरोक्त राशिवाले शनि की शांति के लिये हनुमान जी से युक्त पीपल की परिक्रमा, तिल तेल का दीपक, काली तिल्ली आदि से पूजन तथा ७ परिक्रमा लोहे का छल्ला धारण करें सुन्दरकाण्ड, हनुमान चालीसा आदि का पाठ करने से शांति प्राप्त होगी।

राहू—वर्ष के आरंभ में कर्क के रहेंगे, पौष शुक्ल चतुर्दशी को मिथुन के होंगे।

केतु—वर्ष के आरंभ में मकर के रहेंगे ततः पौष शुक्ल चतुर्दशी को धनराशि पर होंगे, इन राशि वालों को जप पूजनादि शांति देगी।

विशेष—गौ, गणेश, गीता, गायत्री जप, गंगा स्नान, इनके सेवन से सभी प्रकार के ग्रहों की बाधा शांति होगी तथा सुख समृद्धि होगी।

॥ शुभम् भूयात् ॥

॥ श्रीः ॥

ग्रहण संबंधी विवेचन

वर्तमान संवत् २०३८ में २ ग्रहण हैं—१ सूर्य ग्रहण, १ चंद्र ग्रहण है। उपरोक्त दोनों ही ग्रहण संपूर्ण भारत में दिखाई देंगे। काठमांडू, थिम्पू आदि देशों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देंगे, अतः आस्तिक एवं धार्मिक जनता को पूर्ण रूपेण इसका मान करना चाहिये। विवरण नीचे दिया जा रहा है—

सूर्य ग्रहण—श्रावण कृ० अमावस, शुक्रवार, दिनांक ३१ जुलाई ८१ को सूर्योदय के बाद प्रातःकाल में स्टैंडर्ड समय ६-५२ पर पुष्य नक्षत्र, कर्क राशि पर लगेगा—यह संपूर्ण भारत में दृश्य होगा—यह ग्रहण खण्ड ग्रास है—

चन्द्र ग्रहण—पौष शुक्ल पूर्णिमा, शनिवार, दिनांक ९-१० जनवरी ८२ को रात्रि में स्टैंडर्ड समय ११-४३ पर पुनर्वसु नक्षत्र एवं मिथुन राशि पर लगेगा। यह संपूर्ण भारत में दृश्य होगा। यह ग्रहण खग्रास (सर्वग्रास) है—

उपरोक्त दोनों ही ग्रहण संपूर्ण भारत में दिखाई देंगे अतः सर्वमान्य हैं—

दोनों ग्रहणों की प्रचलित समयानुसार तालिका

सूर्य-ग्रहण	चन्द्र-ग्रहण
श्रावण कृष्ण अमावस्या, शुक्रवार, दिनांक ३१ जुलाई १९८१	पौष शुक्ल पूर्णिमा, शनिवार, दिनांक ९-१० जनवरी १९८२
ग्रहण का समय प्रचलित मान्य (स्टैंडर्ड) समय से है।	ग्रहण का समय प्रचलित मान्य स्टैंडर्ड समय से है।
स्पर्श — प्रातः ६-५२ मध्य — ,, ७-३५ मोक्ष — ,, ८-२१	स्पर्श रात्रि ११-४३ मध्य ,, १-२५ मोक्ष ,, ३-७
इस ग्रहण की छाया ३० जुलाई अर्थात् १ दिन पूर्व सायंकाल में ६-५२ से लगेगी।	इस ग्रहण की छाया इसी दिन मध्याह्न में २-४३ से लगेगी।

श्रावण कृष्ण अमावस के सूर्य ग्रहण का फल पुष्य नक्षत्र एवं कर्क राशिवालों को कष्टकारक है।		पौष शुक्ल पूर्णिमा शनिवार के ग्रहण का फल पुनर्वसु नक्षत्र मिथुन राशिवालों को कष्टकारक है।
फल	राशि	फल
व्यथा	मेष	श्री
श्री प्राप्ति	वृष	हानि
क्षति	मिथुन	घात
घात	कर्क	लाभ
हानि	सिंह	सुख लाभ
लाभ	कन्या	सुख
सुख	तुला	माननाश
माननाश	वृश्चिक	स्त्री कष्ट
रोग कष्ट	धन	सुख
स्त्री कष्ट	मकर	चिन्ता
सौख्य	कुंभ	व्यथा
चिन्ता	मीन	पीड़ा

उपरोक्त दोनों ही ग्रहण-काल की छाया में बालक, वृद्ध, रोगी को छोड़कर धार्मिक जनता को भोजनादि नहीं करना चाहिये।

॥ श्रीराम ॥

॥ कर्ण-वेध संस्कार ॥

लेखक— सत्सङ्ग परिवार के संस्थापक, संत श्री छोटेजी महाराज

मानव शरीर व्याधि का मंदिर है क्योंकि इसमें अनगिनत जोड़ हैं, अतः उन सन्धियों के संरक्षण-विधान के लिए दीर्घदर्शी, लोकसंग्रही ऋषियों ने संस्कारों का साक्षात्कार किया और उनका मनन कर जीवों के हित के लिए वयक्रम से प्रयोग का निर्देश दिया।

शिशु के शरीर में अण्डकोश मर्म स्थान है। उसमें अनेक व्याधियाँ हो जाती हैं—जैसे सूजन, जल उतरना, चीस होना, अण्ड की पीड़ा से आंतों का खिचाव, पकना, मूत्रावरोध। इन पीड़ाओं से अनिद्रा, चिलक उठना तथा तीव्रता, व्यग्रता का होना सम्भव है, जो जीव को मृत्युतुल्य कष्ट के समीप पहुंचाने वाली घटना है।

इनके शमन के लिए कर्णवेध संस्कार आवश्यक है। आयुर्वेद की बृहत्त्रयी प्रमुख ग्रन्थ सुश्रुत का अभिमत है—रोग आदि से रक्षा तथा भूषण अलंकरण के निमित्त बालकों के कानों का छेदन करना चाहिए।

रक्षा भूषण निमित्तं बालस्य कर्णौ विध्येत्।

शरीर स्थान ॥ १६/१ ॥

द्वितीय स्थल पर कहा गया है—अण्डकोश वृद्धि तथा अंत्र वृद्धि (आँत स्खलन) के निरोध के लिए कर्णवेध आवश्यक है—शङ्खो परि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन सेवनीम्। व्यत्यासाद्वा शिरां विध्ये दन्त्र वृद्धि निवृत्तये। चिकित्सास्थान ।१६।२१। यह संस्कार चूड़ा करण संस्कार (मूड़न) के पश्चात् "पर मूड़न" रूप में समाज में प्रचलित है। जिसका कोई महत्व न समझ केवल रस्म अदायगी के रूप में उसका निर्वाह हो रहा है। अग्रवाल समाज तथा भारत के दक्षिण अंचल में इस संस्कार का पूर्ण सजगता से संपादन होता है। इसलिए आज भी उस वर्ण के लोग स्वस्थ तथा कार्यक्षेत्र में सफल दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

पांचवें वर्ष में यह संस्कार सम्पन्न करने का सर्वसम्मत आदेश है। यह संस्कार पिता करता है। कर्णवेध के लिए सौचिक को आमंत्रित करना चाहिए। ऐसा श्रीपति का आदेश है, क्योंकि उसका वंश परम्परागत अनुभव तथा उस कला में विशेषाधिकार प्राप्त है—सौचिका वेधयेत् कर्णौ सूच्या त्रिगुण सूचया॥ श्रीपति। स्व वंश के अनुसार सूची के भेद प्रस्तुत किए गए हैं—राज-पुत्र के लिए स्वर्णमय सूची, ब्राह्मण व वैश्य के लिए रजत निर्मित सूची तथा शूद्र के लिए लौह सूचिका व्यवहार में लानी चाहिए—सौवर्णी राज पुत्रस्य राजती विप्र वैश्ययोः। शूद्रस्य चायसी सूची मध्यमाष्टां गुलात्मिक॥ वी० मि० सं० भा० १।

मण्डप में शिशु को पूर्वाभिमुख बैठाकर कर्णवेध संस्कार के मंगल कामनार्थ—विधि-हरि-हर, चन्द्र-सूर्य दिग्पाल, नासत्य, सरस्वती-गणेश पुरोहित तथा विद्वद् समाज का पूजन होता है। इसके पश्चात् ॐ भद्रङ्कर्णेभिः ऽ शृणुयाम देवाभद्रं पश्ये माक्षभिर्य्य जात्राः ऽ स्थिरै रङ्गै स्तुष्टु वा ऽ सस्तनू भिर्व्यशे महिदेव हितंदायु ॥यजुर्वेद ॥२५॥२१॥ इस मंत्र से दाहिना कान छेदना चाहिए। फिर ॐ व्वक्षन्ती वेदा गनी गन्तिकर्णंप्रियः सखायं परिषस्वजाना॥ योषेवशिङ्क्ते व्वितताधिधन्वञ्ज्या 'इय ऽ समने पार यन्ती॥ यजुर्वेद ।२६।४० इस मंत्र को पढ़कर बायाँ कान छेदना चाहिए।

कर्णछेदन के पश्चात् फिटकिरी का पाऊडर लगाना चाहिए। इससे किसी प्रकार की क्षति नहीं होगी। इसके पश्चात् बालक को पुरोहित तथा सभी वृद्धजन आशीर्वाद देते हैं तथा बालक की मंगल कामना के लिए सुन्दर मधुर सुस्वादु मिठाइयाँ दी जाती हैं।

श्री रामचरित मानस में इस संस्कार का वर्णन इस भाँति प्राप्त होता है—"करन वेध उपवीत बिवाहा। संग संग सब भए उछाहा॥"

॥ बोलो सच्चिदानन्द भगवान की जय ॥

संवत् २०३८ के नवीन आजीवन सदस्यों की नामावली

आजीवन सदस्यता शुल्क २५) पचीस रुपया मात्र है।

१. श्रीमती शान्ति देवी भार्गव
डी. ६४/५२ जी, सिगरा
सिगरा चर्च के पीछे, वाराणसी।

२. गौरीशंकर तिवारी
श्री फैन्सी साड़ी हाऊस, आस भैरव, वाराणसी।

३. श्रीमती आशा कपूर
डी १/७, सरस्वती फाटक, वाराणसी।

४. पं. लाल विहारी जी कपूरिया
प्रधान राजपुरोहित, महाराजा बर्दवान
डी ५३/६७, पी-एन् १२,
महाराणा प्रताप नगर, वाराणसी।

५. प्रोफेसर महाराज नारायण मेहरोत्रा
प्रिंसिपल कालोनी;
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

६. श्री नरेन्द्र नारायण चड्ढा
सिविल लाईन, प्रतापगढ़।

७. श्री घनश्याम नारायण कोहली
द्वारा श्री देवी नारायण, एडवोकेट,
डी १०/२२, साक्षी विनायक,
विश्वनाथ गली, वाराणसी।

८. श्री दीपक वैश्य
७/५८, तिलकनगर, कानपुर।

९. आलोक टंडन
बी २७/३४, बी. रवीन्द्रपुरी,
एक्सटेंशन लेन नं० ३, वाराणसी।

१०. अभिषेक कुमार शर्मा
द्वारा भारत होम्यो स्टोर,
नीचीबाग, वाराणसी।

११. पं० रामनिवास कुमड़िया
द्वारा रामनिवास कुमड़िया प्राइवेट लिमिटेड,
२६/ए, सर हरी राम गोयनका स्ट्रीट,
कलकत्ता - ७०।

१२. के० सी० टंडन "छाया"
४/२७८, विष्णुपुरी, कानपुर।

१३. केदारनाथ खन्ना
खन्ना स्टील वर्क्स, १७८, सिविल लाईन, बरेली।

१४. चुन्नीलाल मलहोत्रा, एडवोकेट
एल. ३७७, माडल टाऊन, करनाल।

१५. किशन चंद जेतली
५६६, कटरा नील, दिल्ली-६।

१६. रमेश खन्ना
द्वारा दास ज्वेलर्स,
६ ए.-सुन्दर नगर मार्केट, नई दिल्ली-१।

१७. जगमोहन दास सेठ
सब रजिस्ट्रार, कृपा प्रयाग निवास,
मोती नगर, लखनऊ।

१८. सूरज चन्द्र मिश्रा
के. ६१/१३७ ए, बुलानाला, वाराणसी।

१९. श्री त्रिलोकी नाथ टंडन
५६ सोंधी टोला, चौक, लखनऊ-२२६००३

२०. श्री बद्रीनाथ जी सूद
भट्ठा बाजार, पूर्णिया (बिहार)।

२१. श्रीमती नन्दरानी बहल
धर्मपत्नी, श्री दीवान चन्द्र बहल, रामघाट
वाराणसी।



॥ डाला छठ का विवेचन (निर्णय) ॥

कला काष्ठा निमेषोपि यदि स्यादपरे हृनिः ।
षष्ठ्यां कथं चिद्धिप्रेन्द्र सैवो पोष्या प्रयत्नतः ।
अनेन सायं सप्तम्यां मपि प्रथमोर्घोविधेयः ॥

१ कला, १ काष्ठा, १ पल भी यदि दूसरे दिन षष्ठी हो, तो हे राजन्, वही षष्ठी का प्रयत्न से व्रत करना चाहिये इस वाक्य से सायंकाल में भी सप्तमी हो तो प्रथम अर्घ सायंकाल का देना चाहिये—

द्वैत निर्णये—

षष्ठी समेता कर्तव्या सप्तसो नाष्टमी पुनः ॥
पतंगोपासना याश्च षष्ठयां माहुरूपोषणम् ॥

भावार्थ—इसका भाव षष्ठीसहित वाली सप्तमी करनी चाहिये, अष्टमीसहित वाली सायंकाल की सप्तमी नहीं करनी चाहिये । पतंग (सूर्य) की उपासना में षष्ठी उदय काल में रहे, तो सायंकाल में भी प्रथम सूर्यार्घ दिया जा सकता है ।

कृत्यशिरोमणि—

उदय काले यद्दिने षष्ठी तस्य सायंकाले षष्ठयांम,
सत्यामपि तत्रैवार्घोदियः सप्तम्यां नुरोधात् ॥

भावार्थ—उदय काल में जिस दिन षष्ठी रहे उसी दिन सायंकाल में षष्ठी न भी रहे, सप्तमी ही हो, तो भी सूर्यार्घ देना चाहिये । षष्ठयांमुपोष्य सप्तम्यां विधिवद् अर्कमर्चयेत् इति पद्म पुराणे, षष्ठी का व्रत करके सप्तमी में विधि पूर्वक सूर्य पूजन करना श्रेयस्कर है ।

माधवीये स्कान्दे—

नागविद्धातु ये षष्ठी मुपोष्यन्तिह मानवाः ॥ वृद्धि श्रेयश्च कल्याणं तेषां नश्यन्ति पूर्वजम् ॥
सगरेण कृतापूर्वं पंचम्या सह भारत ॥ हृतं पुत्र सहस्रं तु तस्मा द्विद्वान् न कारयेत् ॥
अतो अत्र पंचमी युता या निषेधात् सप्तमी युतेतिंनिर्णयः ॥

भावार्थ—पंचमी विद्धा षष्ठी का जो मनुष्य व्रत करता है, उसका बढ़ना, कल्याण, कीर्ति आदि पूर्व की भई नष्ट हो जाती है । राजा सगर ने पंचमी सहित वाली षष्ठी की थी, सो उसके सहस्र पुत्र नष्ट भये, इसलिये विद्वान् को ऐसी तिथि न करनी चाहिये- इसलिये पंचमीयुक्त षष्ठी का निषेध है, सप्तमी युक्त ग्राह्य है—ऐसा युधिष्ठिर को देव भगवान कृष्ण नें कहा है ।



धन्यवाद प्रकाश

श्रीमान् बाबू लक्ष्मण दास कपूर, बम्बई, तथा श्रीयुत् बाबू कार्तिक प्रसाद खन्ना, कलकत्ता, इन दोनों ही सत्पुरुषों के हार्दिक एवं निःस्वार्थ सहयोग के लिए धन्यवाद शब्द तो बहुत छोटा प्रतीत होता है । अतः सभा इनकी शुभाकांक्षी है ।

श्री सारस्वत सभा, काशी के प्रधान मंत्री पं० डा० शिवनारायण झिंगन द्वारा प्रकाशित एवं
श्री विश्वनाथ दत्त द्वारा दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लि०, गोदौलिया, वाराणसी से मुद्रित ।